



अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

अर्हत उवाच

दुःखेण पुढे धुयमाइएज्जा।

दुःख से स्पष्ट होने पर
शांत रहें।

• नई दिल्ली • वर्ष 24 • अंक 20 • 20 - 26 फरवरी 2023



प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 18-02-2023 • पेज : 12 • ₹ 10

वीतराग प्रभु की भक्ति से शक्ति जागृत हो सकती है : आचार्यश्री महाश्रमण



जीरावला पार्श्वनाथ, 94 फरवरी, 2023

मर्यादा पुरुषोत्तम आचार्यश्री महाश्रमण जी प्रातः लगभग 93 किलोमीटर का विहार कर जीरावला गाँव में जीरावला पार्श्वनाथ परिसर में पधारे। आचार्यश्री प्रबोधचंद जी महाराज से

आध्यात्मिक मिलन एवं धर्मचर्चा हुई। मुख्य प्रवचन में अमृत देशना प्रदान करते हुए पूज्यप्रवर ने फरमाया कि लोगस का पाठ एक स्तुति का पाठ भी है और कुछ माँगने का पाठ भी है।

माँगने के साथ स्तुति का भी योग

होता है। लोगस में चौबीस तीर्थकरों की नामों की उल्लेखपूर्वक वंदना की गई है। नाम पच्चीस हैं, तीर्थकर चौबीस बताए गए हैं। सुविधिनाथ के दो नाम दे दिए। प्रत्येक अवसर्पिणी काल और उत्सर्पिणी काल में तीर्थकर, चौबीस तीर्थकर ही भरत-ऐरावत

क्षेत्र में होते हैं, ऐसी व्यवस्था है।

वर्तमान अवसर्पिणी काल में भरत क्षेत्र में प्रथम तीर्थकर भगवान ऋषभ हुए। भगवान ऋषभ की स्तुति में भक्तामर स्तोत्र है, बहुत लोग इसका पाठ करते हैं। भक्तामर की तर्ज पर दूसरा स्तोत्र है—कल्याणमंदिर स्तोत्र, जो भगवान पार्श्व की स्तुति पर आधारित है। भगवान पार्श्व से जुड़ा हुआ स्थान जहाँ हम आज आए हैं। भगवान पार्श्व के जितने मंदिर हैं, उतने मंदिर शायद अन्य तीर्थकरों के संभवतः नहीं मिलते। यह भगवान पार्श्व की लोकप्रियता को साक्षात् करने वाला है।

भगवान पार्श्व के साथ धरपेंद्र पद्मावती का भी योग है। भगवान पार्श्व तो वीतराग प्रभु थे। उनके उपासक तो मनुष्य व देवी-देवता होते हैं। तीर्थकर तो देवाधिदेव होते हैं। धर्म-अध्यात्म के अधिकृत प्रवक्ता तीर्थकर प्रभु होते हैं। भगवान पार्श्व को पुरुषादानीय विशेषण प्राप्त है। स्तुति करने वाले का कल्याण हो सकता है।

लोगस में तीर्थकरों को बार-बार वंदना की गई है, स्तुति की गई है। तीर्थकर मेरे पर प्रसन्न रहें। माँग की गई कि मुझे आरोग्य, बोधि लाभ और समाधि दो। मुझे

सिद्धि प्रदान करें। माँग तो जो समर्थ है, उनसे करें। ये मंदिर धर्म-उपासना से जुड़े स्थान हैं।

चौबीसों ही तीर्थकर समान शक्ति संपन्न हैं। नाम-स्थान अलग-अलग हो सकते हैं। जन्म, दीक्षा, कैवल्य व निर्वाण के स्थान अलग-अलग हो सकते हैं। अंतिम तीर्थकर भगवान महावीर हुए हैं। हम भगवान महावीर के शासन से संबद्ध हैं। भावों को अनेक शब्दों में विभक्त किया जा सकता है। हम वीतराग प्रभु के पार्श्व में रहें। वीतराग प्रभु की भक्ति से शक्ति जागृत हो सकती है।

प्रभु पार्श्व देव चरणों में शत-शत प्रणाम हो। गीत का सुमधुर संगान पूज्यप्रवर ने किया। वीतराग की भक्ति से हमारे में भी शक्ति जागे। हम भी वीतरागता की दिशा में खूब मजबूती से कदम आगे बढ़ाएँ और कभी वीतरागता को प्राप्त हो जाएँ। राग-द्वेष मुक्त बन जाएँ।

पूज्यप्रवर के स्वागत में जीरावला पार्श्वनाथ परिसर के मंत्री पोपट भाई जैन ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

शुभ भावों से पाप कर्म के बंध से बचा जा सकता है : आचार्यश्री महाश्रमण

पावटी, 92 फरवरी, 2023

परम पावन आचार्यश्री महाश्रमण जी प्रातः लगभग 6:5 किलोमीटर का विहार कर जालौर जिले के पावटी ग्राम स्थित राजकीय माध्यमिक विद्यालय पधारे। मंगल प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए गुरुदेव ने फरमाया कि यह पुरुष! अनेक चित्तों वाला होता है। मनुष्य में भाव परिवर्तन भी हो जाता है।

दो प्रकार के भाव हो जाते हैं—शुद्ध भाव और अशुद्ध भाव। शुद्ध-अशुद्ध या शुभ-अशुभ भाव भी अनेक प्रकार के होते हैं। मन के अशुद्ध और अशुभ भावों से दुःख प्राप्त हो सकता है, इसलिए अशुद्ध भावों से आदमी बचे। शुभ व शुद्ध भावों से आदमी सुख को प्राप्त होता है। भीतर का भाव जगत मोहनीय कर्म से जुड़ा हुआ है। मोहनीय कर्म के प्रभाव से भाव अशुद्ध हो जाते हैं। मोहनीय कर्म के वियोग से शुभ भाव बन जाते हैं। मोहनीय कर्म एक तरह का नागराज है। भावों के प्रभाव से चिंतन बदल जाता है, यह एक प्रसंग से समझाया। बुढ़ापा आने से शरीर क्षीण हो सकता है। भावों से तो गन्ने का रस भी सूख जाता है।

जैन दर्शन में छः लेश्याएँ बताई गई हैं, इन लेश्याओं से भावों के परिणाम शुभ-अशुभ हो सकते हैं। इनमें प्रथम तीन अशुभ व शेष तीन शुभ परिणामों से संबंधित है। शुभ भावों से पाप कर्म के बंध से बचा जा सकता है। शुभ योग से पुण्य का बंध होता है और निर्जरा भी होती है। अशुभ योग से पाप बंध होता है। हम अपने योगों को शुभ रखने का प्रयास करें।

पूज्यप्रवर के स्वागत में राजसमंद से लक्ष्मणसिंह कर्णावट, विद्यालय की ओर से जीवदान चारण ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। व्यवस्था समिति की ओर से विद्यालय परिवार का सम्मान किया गया।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।





अध्यात्म जगत में ध्यान का शीर्ष स्थान : आचार्यश्री महाश्रमण

सायला, ७ फरवरी, २०२३

धर्म चक्रवर्ती आचार्यश्री महाश्रमण जी लगभग १४ किलोमीटर का विहार कर सायला पधारे। पूज्यप्रवर ने मंगल प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि अध्यात्म जगत में ध्यान का बहुत महत्त्व है। ध्यान की अनेक पद्धतियाँ चलती हैं। बहुत लोग ध्यान शिविरों में भाग लेते हैं। ध्यान का प्रयोग भी करते हैं। तेरापंथ धर्मसंघ में प्रेक्षाध्यान पद्धति चलती है।

जैसे शरीर में सिर का, वृक्ष में मूल का स्थान है, वही स्थान सर्वसाधु धर्म में ध्यान का होता है। एकाग्र चिंतन करना ध्यान हो जाता है। शरीर, मन और वाणी की प्रवृत्ति का निरोध करना भी ध्यान हो जाता है।

जैन वाङ्मय में ध्यान के चार प्रकार बताए गए हैं—आर्त, रौद्र, धर्म और शुक्ल ध्यान। आर्त-रौद्र ध्यान असद् ध्यान है। धर्म-शुक्ल ध्यान, शुभ ध्यान है,



जिस ध्यान के साथ मोह जुड़ा है, वह अशुभ ध्यान है। शरीर, मन और वाणी की प्रवृत्ति योग है। योग भी शुभ-अशुभ होता है। योग के साथ मोह कर्म जुड़ने से वह अशुभ क्षेत्र हो जाता है। योग के

साथ मोह का वियोग है, तो योग शुभ हो जाता है।

हम अशुभ ध्यान से बचने का प्रयास करें। एक प्रसंग से समझाया कि मोह आने से व्यक्ति आर्तध्यान में जा सकता है। प्रिय

के वियोग से आर्तध्यान आ सकता है तो अप्रिय के संयोग से भी आर्तध्यान हो सकता है। प्रेक्षाध्यान शुभ ध्यान है, उसे करने का प्रयास करें। आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी बहुत प्रेक्षाध्यान करवाते थे। ध्यान

हमारे लिए कल्याणकारी सिद्ध हो सकता है। कायोत्सर्ग ध्यान का महत्त्वपूर्ण प्रयोग है। प्रेक्षाध्यान के पाँच सूत्र हैं—भावक्रिया, प्रतिक्रिया विरति, मैत्री, मिताहार और मितभाषण। पूज्यप्रवर ने प्रेक्षाध्यान का प्रयोग करवाया।

आज सायला आए हैं। १० वर्ष बाद पुनः आना हुआ है। सबमें अच्छा धर्म-ध्यान का क्रम चलता रहे।

पूज्यप्रवर के स्वागत में चंद्रशेखर सालेचा, लीलाबाई सालेचा, सालेचा परिवार द्वारा गीत प्रस्तुत किया गया। स्थानीय सरपंच रजनी कंवर, किरण कंवर, ज्ञानशाला ज्ञानार्थी, स्कूल के प्रिंसिपल गहरीराम ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। पूज्यप्रवर ने ज्ञानार्थियों को गीतिका सीखने की प्रेरणा दी। व्यवस्था समिति द्वारा विद्यालय परिवार का स्मृति चिह्न से सम्मान किया।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी द्वारा किया गया।

विशिष्ट बनने के लिए शिष्ट बनें : आचार्यश्री महाश्रमण



रेवंतड़ा, ८ फरवरी, २०२३

तीर्थकर के प्रतिनिधि आचार्यश्री महाश्रमण जी अपनी धवल सेना के साथ विहार कर रेवंतड़ा पधारे। मंगल प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए पूज्यप्रवर ने फरमाया कि पूरी दुनिया में ८४ लाख जीव योनियाँ हैं। इन ८४ लाख जीवयोनियों में संसारी जीव जन्म-मरण करते रहते हैं।

जीव जो संसारी है, उनका बार-बार जन्म-मरण होता रहता है। इन ८४ लाख जीव योनियों में अनंत-अनंत जीव हैं। हमें मनुष्य जन्म प्राप्त हुआ है। मनुष्य

चिंतनशील प्राणी है। सब जीव जीवन जीना चाहते हैं। जीने की शैली कलापूर्ण हो। जैन साहित्य में बहत्तर कलाएँ बताई गई हैं। अनंत छोटे-छोटे प्राणी संसार में हैं।

कोई आदमी बहत्तर कलाएँ सीख जाए पर यदि धर्म की कला को नहीं जानता तो वह व्यक्ति पंडित होकर भी अपंडित है।

धर्मविहीन श्वास लेने वाला व्यक्ति भी धर्म की दृष्टि से जीवित नहीं है। जीवित वह होता है जिसमें धर्म होता है।

विद्यालय में विद्यार्थियों को अनेक विषयों के साथ धर्म की कलाएँ समझायी जाएँ तो विद्यार्थियों में और विकास हो जाए। खुद का जीवन शिक्षा देने वाला बन सकता है। विद्यालय व माता-पिता से विद्यार्थी को अच्छे संस्कार मिलते रहें। जब संस्कार वर्षा से विद्यार्थी भीग जाते हैं और वह वर्षा का पानी भीतर तक चला जाता है तो विद्यार्थी विशिष्ट बन सकते हैं। विशिष्ट बनने के लिए शिष्ट बनना पड़ता है। अनुशासन से विकास हो सकता है।

एक प्रसंग से समझाया कि अच्छे संस्कार से व्यक्ति देश का विशिष्ट नागरिक बन सकता है। सद्भावना, नैतिकता, नशामुक्ति के संस्कार विद्यार्थी में रहें। अच्छे-सच्चे बच्चे समाज और देश के भविष्य होते हैं। वे समाज और देश के विकास में निमित्त बन सकते हैं।

पूज्यप्रवर के स्वागत में गौतम सेठिया, जैन समाज से देवीचंद हीराणी स्कूल के अध्यापक महेंद्रसिंह राजपुरोहित ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

आचार्य श्री तुलसी की पुण्यतिथि पर अंताक्षरी का आयोजन

लिलुआ।

मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में तेरापंथ सभा के तत्त्वावधान में आचार्यश्री तुलसी की मासिक पुण्यतिथि पर कार्यक्रम तेरापंथ सभा भवन में संपन्न हुआ। रात्रि में अंताक्षरी का कार्यक्रम भी संपन्न हुआ।

इस अवसर पर मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा कि संयम और तप में पराक्रम करने वाला साधक महापुरुष कहलाता है। दुनिया में अनेक महापुरुष हुए हैं, जिन्होंने अपने व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व के द्वारा मानवता की, जिनशासन की प्रभावना की है। उनमें एक स्वर्णिम नाम है आचार्यश्री तुलसी। आचार्यश्री तुलसी युगदृष्टा, युगसृष्टा, मानवता के पुजारी व शांति के पैगंबर थे। उन्होंने नैतिक विकास व चारित्रिक उन्नयन के लिए अणुव्रत आंदोलन का सूत्रपात किया। तनाव से ग्रस्त युवापीढ़ी को धर्म का सही मार्ग बताया। बाल पीढ़ी के सुसंस्कार के लिए ज्ञानशाला का उपक्रम दिया।

महिला जागरण, शिक्षा, संस्कार, साहित्य आदि अनेक रचनात्मक कार्यक्रम संघ समाज को दिए। मुनिश्री ने आगे कहा कि आचार्यश्री तुलसी ज्योतिर्धर पुरुष थे। वे अनुशासनप्रिय थे। उनमें शास्ता के अनुपम गुण थे। वे कुशल प्रवचनकार, संगीतकार थे। उन्होंने लंबी-लंबी यात्रा करके मूर्च्छित मानवता को संजीवनी औषध देकर बहुत बड़ा उपकार किया। मुनि कुणाल कुमार जी ने मधुर संगीत प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का शुभारंभ भजन मंडली द्वारा किया गया।

♦ शरीर और आत्मा—इन दो तत्त्वों का संयोग जीवन, इनका वियोग मृत्यु तथा इन दोनों का हमेशा के लिए अलग-अलग हो जाना मोक्ष है।

—आचार्यश्री महाश्रमण

समणी स्थितप्रज्ञा जी के प्रति उद्गार

प्रयोगधर्मा स्थितप्रज्ञा

● समणी सत्यप्रज्ञा ●

संस्कार, संन्यास और सहकार का उग्र से नहीं, मानसिक व भावनात्मक स्तर से योग होता है। जैन धर्म, तेरापंथ धर्मसंघ में समण श्रेणी की स्थापना के प्रतीक रूप अभिधान प्राप्त समणी स्थितप्रज्ञा के जीवन में इनका प्रशस्त रूप दृष्टिगोचर होता है।

योग बुद्धि का पहला स्वरूप है—कर्तव्य निश्चय। भगवान महावीर का सूक्त है—‘आणाए मामगं धम्मं’। इसका अर्थ है—आज्ञा ही मेरा धर्म है। भगवान की आज्ञा व गुरु की आज्ञा ही समणी स्थितप्रज्ञा के लिए जीवन में धर्म रही। गुरु द्वारा इंगित व्यवस्था एवं व्यवस्थापकों के प्रति भी वे सदा सर्वात्मना समर्पित रहे। उनका संयम सदा वर्धमान रहा।

व्यक्ति का तत्त्वज्ञान उसकी बुद्धि में गुप्त रहेगा, प्रकट होगा उसका आचरण। संयम के संस्कार उनकी जीवनशैली के साथ जुड़े हुए थे, इच्छाओं का संयम, उपकरणों का संयम, अपरिग्रह की चेतना को दर्शाने वाला था। पदार्थों के उपयोग का संयम भी अनूठा था। पानी को घी की तरह उपयोग में लाना उनका स्वभाव था। फलतः वस्त्र-पात्र आदि की अच्छी से अच्छी सफाई वे अल्प पानी में कर लेते। पानी भी जीव है, अनावश्यक अपव्यय न हो—इसके लिए प्रेरणा भी वे निरंतर देते रहते। मन व इंद्रिय

संयम के साथ उनकी जीवनशैली जुड़ी हुई थी।

ध्यान व स्वाध्याय चेतना से प्रयोगधर्मी बनकर संन्यास को निखारना समणी स्थितप्रज्ञा का लक्ष्य रहा। आसन-प्राणायाम-जप आदि के प्रयोगों से उन्होंने स्वयं भी लाभ उठाया व दूसरों को भी पर्याप्त सहयोग दिया। पहले वे पढ़ने-लिखने हेतु नंबर का चश्मा पहनते थे पर रंग चिकित्सा का उपयोग करते हुए उन्होंने अपने विजन को सही कर लिया और बिना चश्मे के ही पढ़ने-लिखने लगे। जैन आगम, अहिंसा, प्रेक्षाध्यान व जीवन विज्ञान के शिक्षण-प्रशिक्षण से उन्होंने जैन संन्यास की आत्मा का स्पर्श करने का प्रयास किया।

अपने स्वार्थ को गौण कर दूसरों को सहयोग देने में आनंद का अनुभव करना उनकी वृत्ति रही। कोई भी कार्य छोटा या बड़ा नहीं होता, सामने जो करणीय कार्य है, जहाँ अपेक्षा है, वे यदि सामने हैं तो वे उसके लिए तत्पर हो जाते। कभी किसी दवा आदि की अपेक्षा के लिए उनके पास जाते, वे तत्काल निकाल कर देते। विशेष पथ्य आदि की अपेक्षा के लिए कहीं जाना होता, वे सहयोग देने के लिए तैयार होते, व्यक्तिगत या शारीरिक सेवा की अपेक्षा होती, वे चलाकर आत्मीय भाव से संलग्न

हो जाते। कैसे भूल सकती हूँ वो समय, जब मेरे बाद हाथ का फ्रेक्चर हुआ। दायाँ हाथ कुछ कार्य तो स्वयं कर सकता था, लेकिन स्वयं की सफाई तो नहीं कर सकता था। मैं अभिभूत हो गई, जब उन्होंने मेरे दाएँ हाथ की सफाई की। सामान्यतः वस्त्र प्रक्षालन आदि में सहयोग बड़ों से क्या लिया जाए! लेकिन उनकी आत्मीयता ने उसमें भी समय पर हाथ बंटया।

स्थितप्रज्ञ में कंपन और वक्रता नहीं होती। बाहरी दिखावे की अपेक्षा भीतरी दृश्य से ही वे तृप्त होते हैं, आत्म संतुष्ट होते हैं। समणी स्थितप्रज्ञा का सहकार भाव प्रदर्शन से प्रायः परे रहा। विश्वविद्यालय के प्रारंभिक काल में जो साध्वियों पीएच०डी० कर रहे थे, प्रश्न हुआ उनकी थीसिस का प्रस्तुतीकरण कैसे हो? समणी स्थितप्रज्ञा जी आगे आए। कई साध्वियों की थीसिस का कम्प्यूटर से कम्पोजिंग कार्य उन्होंने रात-दिन लग कर किया। प्रूफिंग आदि में तो कितनों को सहयोग दिया।

किसी भी जीवन को समय पर कुछ पहलुओं से ही प्रस्तुत किया जा सकता है। ज्ञान-विज्ञान और प्रयोगधर्मा जीवन की यह प्रस्तुति उनकी सुसंस्कृति को अपने भीतर समेटने के प्रयास स्वरूप ही हो—ऐसी भावना है।

In Remembrance of Samani Stith Pragya ji

● Samani Rohini Pragya ●

December 31st, 2022, turned into an emotional day for the entire Saman Order of Terapanth. It was a breaking news of Samani Prof. Stith Pragya ji's last breath. There was a sudden upheaval in her health on 29th December 2022 evening. With in matter of just two days it got to its climax. The critical health condition was informed to her. She with no loss of time, with her eye gesture approved for fasting unto death and upgradation of ascetic life. Her passing was unexpected with the last day of 2022. There is no way for her physical return from Jaipur. With the deep sense of gratitude, we however, cherish the golden moments spent and enjoyed together in Samani family.

Pioneer

1980, first time in Jain history a new venture of asceticism (Samani Order) took its breath. Samani Stith Pragya ji had the privilege to be the pioneer of this order based on her seniority. In the background of this privilege, she did strong sacrifice to convince her parents. It was her firm devotion towards the words of *gurus* of terapanth order that she could stand all the odds both philosophical and pragmatic.

Personality

Her helping hands and unconditional love in time of needs was truly full of care and devoid of formality expression. Her ability to read others pain and suffering was exceptional. In such times she would make herself available in every respect no matter even like a junior most Samani. Her opening, middle and concluding part of life, in many respects is inspiring and powerful. She was a resolute meditation and austere practitioner. Her firm conviction in healing through spiritual ways was exemplary. Her keen desire for knowledge, contemporary global updates and advancement opened welcoming opportunities in educational field. Her services to university programs and community are remarkable. A blend of knowledge and spiritual training is what she was emerged into, and it is that which she shared with others too. I remember as a new Samani initiate had the opportunity to accompany her some twenty years back in one of her classes for the PG distance education students held at Ladnun. It was the class for mantra meditation. Almost 21 different chants were offered by her. The chant practice was so powerful that I could sense the vibration even now echoing in my head. One of the chants that I learned then ‘*Gamoabhayadayāmi*’ worked very well in overcoming fear in an infant in 2017 when it was written on all the four sides of kid's room wall in pink color. My humble gratitude for what she taught to me and many of us. Her smiling face, helping hands and kind heart has a deep impression in our lives. With deep respect and unforgettable memories to offer our tribute to the departed soul. May the soul advance in its spiritual journey.

मंगलभावना समारोह का आयोजन

गंगाशहर।

तेरापंथी सभा, गंगाशहर द्वारा साध्वी कीर्तिलता जी की चाकरी की परिसंपन्नता के अवसर पर उनका मंगलभावना समारोह आयोजित किया गया। समारोह में शासनश्री साध्वी शशिरेखा जी ने साध्वियों द्वारा की गई सेवाचर्या की प्रशंसा करते हुए कहा कि तेरापंथ धर्मसंघ में वयोवृद्ध साध्वियों की सेवा को देखकर वयोवृद्ध बहनों ने भी दीक्षा को श्रेष्ठ बताया। उन्होंने सेवा करके ऋण मुक्त होने की बात कही।

साध्वी ललितकला जी ने कहा कि यह समय हमारे जीवन का सर्वश्रेष्ठ समय होता है। भविष्य में भी यदि चाकरी का अवसर मिले तो गंगाशहर सेवा केंद्र का ही चयन करें। साध्वी कीर्तिलता जी ने गुरुदेव के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए कहा कि मैं सौभाग्यशाली हूँ कि मुझे चार चाकरी पूर्ण करने का अवसर मिला तथा साथ ही चारों चाकरियों में पूज्यप्रवर का पदार्पण हुआ। उन्होंने वृद्ध साध्वियों के गुणों की व्याख्या करते हुए सेवाकेंद्र को साताकारी बताया।

साध्वी कांताश्री जी, साध्वी लाभवती जी, साध्वी कंचनबाला जी, साध्वी ज्योतिश्री जी, साध्वी मल्लिकाश्री जी, साध्वी श्रेष्ठप्रभा जी ने भी सभा को संबोधित किया। सेवाकेंद्र में विराजित तथा सेवा करने वाली साध्वियों द्वारा सामूहिक गीत का संगान किया।

कार्यक्रम का शुभारंभ कन्या मंडल द्वारा मंगलाचरण से किया गया। महिला मंडल, चैनरूप छाजेड़, इंद्रचंद्र छाजेड़, तोलाराम श्यामसुखा, धर्मचंद्र श्यामसुखा

द्वारा मंगलभावना गीत प्रस्तुत किया गया। तेरापंथी सभा के अध्यक्ष अमरचंद्र सोनी, तेरापंथ न्यास के ट्रस्टी लूणकरण छाजेड़, आचार्य तुलसी शांति प्रतिष्ठान के मंत्री दीपक आंचलिया, तेषुप मंत्री भरत गोलछा, अणुव्रत समिति मंत्री भंवरलाल सेठिया, प्रकाश भंसाली रोहित बैद, कन्हैयालाल बोथरा, कनक गोलछा, सिरिया गुलगुलिया आदि ने अपने विचार अभिव्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन मंजु आंचलिया ने किया।

सकारात्मक ऊर्जाएँ जीवन में भरती हैं उत्साह

चंडीगढ़।

अगर हम किसी के लिए अच्छा नहीं कर सकते तो दूसरों को सकारात्मक ऊर्जा तो दे सकते हैं, उनसे पॉजिटिव बातें करके, उनके उत्साह को बढ़ाकर जीवन में नई उजाले की रोशनी कर सकते हैं। सकारात्मक ऊर्जाएँ आपके जीवन को सँवार देती हैं। होश और जोश आपके साथ रहता है। मानव निडर होकर कार्य कर सकता है। परिस्थितियों का सामना करने का साहस या शक्ति हमेशा उनके पास रहती है। यह शब्द मनीषी संत मुनि विनय कुमार जी ‘आलोक’ ने अणुव्रत भवन, तुलसी सभागार में व्यक्त किए।

मुनिश्री ने कहा कि प्राकृतिक ऊर्जाओं को दिशाओं के माध्यम से प्राप्त करने के ज्ञान को वास्तुशास्त्र कहते हैं। दिशा के माध्यम के द्वारा परिवर्तन लाना संभव है।

भूल सुधार

अंक - १८ : ६-१२ फरवरी, २०२३ में पेज २ पर ‘समय का सदुपयोग कर उसे सार्थक बनाएँ : आचार्यश्री महाश्रमण’ इस प्रकार पढ़ा जाए।



सत्संगति विषय पर कार्यशाला का आयोजन

राजराजेश्वरी नगर।

अभातेममं द्वारा निर्देशित निर्माण योजना के अंतर्गत उम्मीद एक बेहतर कल की के तहत सत्संगति विषय पर कार्यशाला का आयोजन सरकारी स्कूल में किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ महिला मंडल की बहनों पूनम दक और दीपिका दक के द्वारा नमस्कार महामंत्र से हुआ। महाप्राण ध्वनि का प्रयोग ६ बार करवाया गया।

पूनम दक ने सत्संगति के बारे में जानकारी दी एवं जीवन में सत्संगति का क्या असर होता है और उज्ज्वल भविष्य के लिए इसकी कितनी जरूरत है, उसके महत्त्व को समझाया। दीपिका दक ने कहानी के माध्यम से समझाया कि जीवन में जल का क्या महत्त्व है। बच्चों की जिज्ञासाओं का समाधान दिया गया।

कार्यक्रम में २० बच्चों की उपस्थिति थी। विद्यालय के प्रिंसिपल ने महिला मंडल के इस कार्यक्रम की प्रशंसा की और धन्यवाद व्यक्त किया। सभी बच्चों को उपहार भी दिए गए।

अनावश्यक हिंसा से बचने का प्रयास करें श्रावक

बालोतरा।

अभातेममं के निर्देशानुसार तेममं, बालोतरा के तत्वावधान में शासनश्री साध्वी कमलप्रभा जी, शासनश्री साध्वी कुंथुश्री जी, साध्वी रतिप्रभा जी, साध्वी प्रांजलप्रभा जी के सान्निध्य में न्यू तेरापंथ भवन में हिंसा बनाम अहिंसा Lifestyle without cruelty कार्यशाला का आयोजन किया गया। महिला मंडल मंत्री संगीता बोथरा ने बताया कि सर्वप्रथम नमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम की शुरुआत की गई। महिला मंडल की बहनों के द्वारा प्रेरणा गीत का संगान किया गया।

महिला मंडल अध्यक्ष निर्मला देवी संकलेचा ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। शासनश्री साध्वी कुंथुश्री जी ने कहा कि यह कार्यशाला अभातेममं द्वारा निर्देशित की गई है। अहिंसा के अनेक प्रकार हैं दूसरों की निंदा और आलोचना करना हिंसा है और स्वयं की निंदा और आलोचना करना अहिंसा है। दो प्रकार की हिंसा होती हैं—अर्थ हिंसा, अनर्थ हिंसा तथा आवश्यक व अनावश्यक हिंसा। श्रावक अनावश्यक हिंसा से तो बच ही सकता है।

साध्वी रतिप्रभा जी ने कहा कि भगवान महावीर ने दो प्रकार के धर्म बताए आगार धर्म और अनगार धर्म। श्रावक पूर्णतया हिंसा से नहीं बच सकता है। श्रावक

श्री महिला मंडल के विविध आयोजन

के स्थूल व सूक्ष्म दोनों प्रकार की हिंसा होती है किंतु साधु के स्थूल रूप में हिंसा नहीं होती है सूक्ष्म हिंसा हो सकती है जो कभी प्रमाद की हिंसा या खाने-पीने आदि की हिंसा हो सकती है।

अभातेममं सदस्य व मारवाड़ क्षेत्र प्रभारी सारिका बागरेचा ने भी इस विषय में अपनी प्रस्तुति दी। इस कार्यक्रम में परामर्शक नारायणी देवी छाजेड़, पीपी देवी ओस्तवाल, लूणी देवी गोलेछा, उपाध्यक्ष चंद्रा बालड़, रानी बाफना, कोषाध्यक्ष उर्मिला सालेचा, सहमंत्री रेखा बालड़, प्रचार-प्रसार मंत्री पुष्पा सालेचा, निवर्तमान अध्यक्ष अयोध्या देवी ओस्तवाल, कन्या मंडल संयोजिका साक्षी वैद मेहता, सह-संयोजिका मनीषा ओस्तवाल और पूर्व परामर्शक कमलादेवी ओस्तवाल, पूर्व अध्यक्ष सहित लगभग ८० बहनें उपस्थित थीं। कार्यक्रम का संचालन और आभार ज्ञापन मंत्री संगीता बोथरा ने किया।

संस्कार निर्माण परियोजना कार्यक्रम

भीलवाड़ा।

अभातेममं के निर्देशानुसार संस्कार निर्माण परियोजना के अंतर्गत उम्मीद-एक बेहतर कल की कार्यशाला का द्वितीय एवं तृतीय चरण राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय, सिंधु नगर एवं राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय जवाहर नगर, भीलवाड़ा में तेरापंथ महिला मंडल की बहनों द्वारा आयोजित किया गया।

कार्यशाला में ५वीं से ८वीं कक्षा तक के विद्यार्थी उपस्थित थे। प्रोजेक्ट संयोजिका स्नेहलता झाबक एवं पायल बोल्या के संयोजन में कार्यशाला का प्रारंभ नमस्कार महामंत्र एवं प्रेरणा गीत के संगान से किया गया।

इसी क्रम में अनिता हिरण ने बच्चों को कान व आँख की यौगिक क्रियाओं के साथ ही ज्ञान बढ़ाने के लिए 'नमो पाणस' का २१ बार उच्चारण कराते हुए उसके लाभ बताए। मंत्री रेणु चोरड़िया, अमिता बाबले ने ईमानदारी, सत्य विषय पर एवं पायल बुलिया ने स्वामी विवेकानंद पर रोचक कहानी सुनाई।

टीना मांडोत, सरोज चोरड़िया ने वातावरण को स्वच्छ कैसे रखा जा सकता है, उसके बारे में प्रस्तुति एवं बच्चों से वातावरण को स्वच्छ रखने एवं सत्य बोलने के संकल्प कराए।

पुष्पा पामेचा ने राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के जीवन चरित्र को सबके सामने प्रस्तुत किया। उनसे प्रेरणा लेने के लिए

प्रेरित किया। प्रिंसिपल एवं स्कूल स्टाफ ने बच्चों को संस्कारवान बनाने की दिशा में एवं वातावरण के प्रति जागरूकता लाने में महिला मंडल के इस कार्यक्रम की सराहना की और बच्चों ने भी इस आयोजन के प्रति उत्साह दिखाया। मीडिया प्रभारी नीलम लोढ़ा ने बताया कि शोभना सिर्रोहिया, ममता चिप्पड़, आशा बुलिया एवं टीम द्वारा बच्चों को पुरस्कार वितरित किए। सभी सक्रिय बहनों के सहयोग से कार्यक्रम सफल रहा।

भीलवाड़ा।

अभातेममं के निर्देशानुसार निर्माण परियोजना के अंतर्गत उम्मीद-एक बेहतर कल की कार्यशाला का चतुर्थ चरण राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय जवाहर नगर, भीलवाड़ा में चतुर्थ चरण प्रोजेक्ट संयोजिका पायल बुलिया एवं टीम द्वारा संपादित हुआ।

कार्यशाला का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र से एवं प्रेरणा गीत के संगान के साथ मंगलाचरण से हुआ।

जवाहर नगर विद्यालय में कार्यशाला के इस चरण में पायल बुलिया ने अहंम मुद्रा के प्रयोग करवाए। मीना दुगड़ ने महाप्राण ध्वनि कराते हुए इसके लाभ एवं नशामुक्ति गीत की प्रस्तुति दी। डॉ० राजमति सुराणा ने नशामुक्ति विषय पर विचार व्यक्त किए। प्रेक्षा मेहता ने स्वामी विवेकानंद के जीवन चरित्र पर बच्चों को कहानी सुनाई। करुणा चौधरी ने बुजुर्गों की सेवा के परिप्रेक्ष्य में विचार व्यक्त किए। सरोज चोरड़िया ने अनुप्रेक्षा के प्रयोग करवाए।

सभी बच्चों को सामान्य ज्ञान संबंधित प्रश्न पूछे गए एवं कुसुम बोल्या की तरफ से बच्चों को पुरस्कार वितरित किए गए। बच्चों को जीवन में कभी नशा न करने का संकल्प दिलाया गया। कार्यशाला की सफलता में सुधा रांका का सहयोग रहा। मीडिया प्रभारी नीलम लोढ़ा ने बताया कि स्कूल स्टाफ ने महिला मंडल द्वारा संचालित इस कार्यक्रम की सराहना की।

पुस्तकालय का उद्घाटन

आर०आर० नगर।

अभातेममं द्वारा निर्दिष्ट समृद्ध राष्ट्र योजना के अंतर्गत 'फीड द माइंड' पाठशाला पुस्तकालय परियोजना के तहत तेममं आर०आर० नगर द्वारा मागड़ी रोड स्थित सरकारी स्कूल में पुस्तकालय का उद्घाटन फतेहचंद मंजु बेगवानी परिवार के द्वारा किया गया।

उद्घाटन सत्र का संचालन मंत्री सीमा छाजेड़ ने किया। पुस्तकालय में पुस्तकें रखने

हेतु रैकें, बच्चों के बैठने के लिए टेबल-कुर्सियाँ, विभिन्न प्रकार के इनडोर एवं आउटडोर गेम्स दिए गए।

इस अवसर पर उमाशंकर प्रेसिडेंट ऑफ टीचर्स एसोसिएशन बेंगलुरु, लता एम०आर० विनिपेट क्लस्टर, सी०आर०पी०, हेड मास्टर केम्परमैया, अभातेममं, रा०का० सदस्य मधु कटारिया, जैन विद्या समन्वयक कंचन छाजेड़ की उपस्थिति रही। सभी का सम्मान साहित्य एवं पढ़े के द्वारा किया गया।

अध्यक्ष लता बाफना ने सभी का स्वागत किया। उमाशंकर ने कहा कि पुस्तकालय का उद्घाटन करके आर०आर० नगर महिला मंडल ने अच्छा कार्य किया। पुस्तकालय के लिए ऐसी अच्छी पुस्तकें आदि समान दिया, जिससे बच्चों का अच्छा विकास हो सकता है। यह पुस्तकालय बच्चों के साथ-साथ बड़ों के लिए भी उपयोगी होगा।

अभातेममं की रा०का० सदस्य मधु कटारिया ने मंडल द्वारा लाइब्रेरी के उद्घाटन हेतु बधाई दी व मंगलकामनाएँ प्रेषित की। कार्यक्रम का संयोजन सीमा दक ने किया।

उद्घाटन में मंडल की संरक्षिका बहनें, पूर्व अध्यक्ष, पदाधिकारी बहनों के साथ अच्छी संख्या में उपस्थित रही। सभी का धन्यवाद कन्या मंडल से दिव्या छाजेड़ ने किया।

निर्माण-उम्मीद एक बेहतर कल की

नोखा।

अभातेममं के निर्देशन में तेममं, नोखा द्वारा वेद विद्यालय, सनसिटी कॉलोनी, नोखा में निर्माण के अंतर्गत 'उम्मीद एक बेहतर कल की' का दूसरा चरण आयोजित किया गया।

नमस्कार महामंत्र से मंडल की बहनों द्वारा कार्यक्रम की शुरुआत की गई। अध्यक्ष मंजु वैद द्वारा बच्चों को महाप्राण ध्वनि का ६ बार प्रयोग करवाया एवं उनके द्वारा होने वाले फायदे बताए व रोज यह प्रयोग करने की प्रेरणा दी। मेडिटेशन भी करवाया गया। वेद अध्यापक भेरूलाल शर्मा ने कहा कि वैदिककालीन शिक्षा की अनुशासन व्यवस्था

अत्यंत कठोर थी। वैदिक शिक्षा के व्यावहारिक उद्देश्य रहे हैं, जिनकी आज बहुत जरूरत है। इनमें चरित्र निर्माण, व्यक्तित्व का विकास, कार्यक्षमता और नागरिक जिम्मेदारी का विकास और विरासत व संस्कृति का संरक्षण शामिल है।

वैदिक शिक्षा सुशासन के सिद्धांतों का भंडार है। इन सिद्धांतों को शिक्षा में जोड़कर कल्याणकारी राज्य की अवधारणा को साकार किया जा सकता है। वातावरण को किस प्रकार से स्वच्छ रखना चाहिए। सुमन मरोठी ने बच्चों को समझाया।

धारा लुणावत ने बच्चों को कहानी के माध्यम से बताया कि हमारी संगति अच्छी होनी चाहिए। संगति का असर बहुत होता है और बच्चों से प्रश्न पूछे। मंडल द्वारा बच्चों को ब्लेक बोर्ड, रजिस्टर और पैन का वितरण कर उनका उत्साह बढ़ाया। मंत्री प्रीति मरोठी ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया। अध्यापक मंडल को ऐसे कार्यक्रम करते रहने के लिए धन्यवाद दिया।

हिंसा-अहिंसा कार्यशाला का आयोजन जसोल।

अभातेममं के तत्वावधान में तेममं, जसोल द्वारा सोहनीदेवी सालेचा की अध्यक्षता में हिंसा-अहिंसा कार्यशाला का आयोजन किया गया। सामूहिक नमस्कार महामंत्र से कार्यशाला का आगाज किया गया। महिला मंडल की बहनों द्वारा प्रेरणा गीत से मंगलाचरण किया गया।

उपाध्यक्ष अरुणादेवी डोसी ने कार्यशाला संभागियों का स्वागत किया तथा विषय हिंसा व अहिंसा पर जानकारी दी। महिला मंडल की संरक्षिका पुष्पादेवी बुरड़ ने कहा कि भगवान महावीर ने पाँच महाव्रत में अहिंसा को सबसे ऊपर रखा, बारह अणुव्रतों में भी अहिंसा को पहला दर्जा दिया। यदि दुनिया में सभी अहिंसा का पालन करने लगे, हिंसा का नाम ही नहीं रहेगा।

बारह व्रत की पुस्तक भरे, साधु-साध्वी की प्रेरणा से हिंसा से अहिंसा की ओर अपने को जोड़कर व्यर्थ हिंसा से बचें। कई बहनों ने सिल्क कपड़े पहनने का, वर्क की मिठाई, लेदर वस्तु उपयोग में लेने का त्याग किया। अंत में मंत्री ममता मेहता ने सबका आभार ज्ञापन किया। हिंसा-अहिंसा पोस्टर का अनावरण भी किया गया। बहनों की उपस्थिति सराहनीय रही।

♦ व्यक्ति अनावश्यक बोलने से बचे। कब बोलना व कब मौन रखना सापेक्ष बात है। कब, कहाँ व कैसे बोलना—इसका विवेक अपेक्षित है।

♦ जीवन को अच्छा बनाने के लिए व्यसनमुक्तता आवश्यक है।

— आचार्यश्री महाश्रमण

मर्यादा की बातें करना आसान, पालन करना मुश्किल

कोटा।

साध्वी धनश्री जी के सान्निध्य में 9५६वें मर्यादा महोत्सव स्टेशन क्षेत्र स्थित तुलसी कुटीर में मनाया गया। इस अवसर पर शासनश्री साध्वी धनश्री जी ने मर्यादाओं का महत्त्व बताते हुए कहा कि सृष्टि का निर्माण भी मर्यादा से होता है। आचार्य भिक्षु एक मर्यादा पुरुष थे और उन्होंने संघ की चिरजीविता के लिए अनेक मर्यादाएँ बनाईं व तात्त्विक वैज्ञानिक और दार्शनिक पुरुष थे। इसी कारण संघ तेजस्वी, ओजस्वी बना। मर्यादाओं का निर्माण कलहों से मुक्ति के लिए की गई। इसके द्वारा ही परमार्थ परार्थ

है। सेवार्थ की सिद्धि प्राप्त हो सकती है। मर्यादा की बातें बहुत लोग करते हैं, लेकिन पालन करने की बात आती है तो उनकी संख्या कम हो जाती है इसके कारण लोग परेशान हैं।

कार्यक्रम का संचालन साध्वी शीलयशा जी ने किया। इस अवसर पर साध्वी शीलयशा जी और साध्वी विदितप्रभा जी ने गीत के द्वारा अपनी प्रस्तुति दी। साध्वी सलिलयशा जी ने अपने वक्तव्य में मर्यादाओं का महत्त्व बताया। सभा के मंत्री धरमचंद जैन, अणुव्रत समिति के मंत्री भूपेंद्र बरड़िया, तेयुप के सचिन जैन, महिला

मंडल अध्यक्ष उषा बाफना आदि ने विचार प्रस्तुत किए।

महिला मंडल की मंजू जैन, मधु दुगड़, सरिता बरड़िया, मधु जैन, अर्पणा जैन, अनिता बरड़िया, स्वाति मेहता, श्वेता जैन कविता दुगड़, भक्ति मेहता आदि ने बोलते हुए ग्रह के माध्यम से अपने विचार प्रस्तुत किए। महिला मंडल द्वारा बोलते हुए के माध्यम से प्रस्तुति दी। वरिष्ठ श्रावक अनिल जैन एवं सभा मंत्री धरमचंद जैन ने श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन करवाया। श्रोतागण सुनकर के भाव-विभोर हो गए।

बसंत पंचमी है पवित्र दिन

विजयवाड़ा।

तेरापंथ भवन में साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी ने कहा कि बसंत पंचमी एवं गणतंत्र दिवस एक साथ उपस्थित है। भारत के संविधान स्थापना का यह पवित्र दिन हमें अपने संविधान के प्रति जागरूक रहने की याद दिलाता है। बसंत पंचमी, सरस्वती आराधना भी श्रुतौपासना की प्रेरणा देता है।

साध्वीश्री जी ने कहा कि आज के दिन तेरापंथ के चतुर्थ आचार्य जीतमल जी ने 'पंच ऋषि स्तवन' की रचना की। यह स्तवन विघ्न विनाशक और संकटहारी है। ऐतिहासिक क्षेत्र सिरियारी में रचित यह रचना चमत्कारिक रचना है। प्रतिदिन इसका स्मरण, स्वाध्याय, आनंद और शांति शक्ति प्रदान करने वाला है।

साध्वीश्री जी ने कहा कि हम सौभाग्यशाली हैं, जिन्हें भगवान महावीर का जिनशासन मिला, आचार्य भिक्षु के रूप में आराध्य मिले और वर्तमान में तेरापंथ आचार्य परंपरा के ग्यारहवें पट्ट पर विराजित आचार्यश्री महाश्रमण जी हमारी सार-संभाल कर रहे हैं। साध्वी चैतन्यप्रभा जी ने विचार व्यक्त किए।

मानव जीवन की सार्थकता अध्यात्म में रमण करना

नोखा।

भौतिकता की चकाचौंध में व्यक्ति दिन-रात भाग-दौड़ कर रहा है। दुर्लभ मानव जीवन को व्यर्थ गँवा रहा है। धन के लालच में अंधा-धुंध भाग-दौड़, पापाचार करके कर्म बाँध रहा है। मानव जीवन की सार्थकता अध्यात्म का जीवन जीना है। धर्म-ध्यान, स्वाध्याय, ध्यान में रमण करके जीवन की कला सीख सकता है—यह उद्गार शासन गौरव साध्वी राजीमती ने तेरापंथ भवन में व्यक्त किए।

आगम का वाचन करते हुए साध्वी पुलकितयशा जी ने क्रोध, मान, माया, लोभ, ईर्ष्या को घटाने को कहा। सहिष्णु व शालीनता का जीवन आनंदमय बताया।



अभातेयुप योगक्षेम योजना

योगक्षेम	अभातेयुप प्रबंध मंडल सत्र - 2019-2021	51,00,000
* श्री बच्छावत परिवार, सरदारशहर-जयपुर		5,00,000
* श्री बसंत अर्पित नाहर, महेंद्रगढ़-उधना		5,00,000
* श्री राकेश कठोटिया, लाडनू-मुंबई		5,00,000
* श्री रूपचंद कोडामल जैनसुख दुगड़, बीदासर-मुंबई		5,00,000
* श्री शंकरलाल विमल विनीत पितलिया, भीलवाड़ा		5,00,000
* श्री शांतिलाल पारसमल दक उमरी, उधना-सूरत		5,00,000
* श्री सुमतिचंद गोठी, सरदारशहर-मुंबई		5,00,000
* श्री विपिन जैन पारख, सिरसा-मुंबई		5,00,000
* श्री राजकुमार गौतम प्रसाद जैन, बेलपाड़ा-उड़ीसा		5,00,000
* श्री सागरमल दीपक विमल कमलेश श्रीमाल, देवगढ़-बड़ौदा		5,00,000
* श्री जैनसुख दीपक बोथरा, छपर-सिलीगुड़ी		5,00,000
* श्री बसंत नवलखा, बीकानेर		5,00,000
* श्री बिमल चोपड़ा, गंगाशहर-यमुनानगर		5,00,000
* श्रद्धानिष्ठ श्रावक केशरीमल, अनिलकुमार, संजयकुमार, सुनीलकुमार चंडालिया (गंगपुर) सूरत		5,00,000



संस्कृति का संरक्षण - संस्कारों का संवर्द्धन जैन विधि - अमूल्य निधि

सगाई व तिलक कार्यक्रम

दिल्ली।

प्रदीप जैन के सुपुत्र ऋषभ जैन व नरेश जैन की सुपुत्री नुपूर जैन की सगाई का तिलक कार्यक्रम जैन संस्कार विधि से संस्कारक मनीष बरमेचा, पवन गिडिया ने संपूर्ण विधि व मंगल मंत्रोच्चार से संपादित करवाया।

संस्कारक मनीष बरमेचा ने सभी का तेयुप, दिल्ली की तरफ से आभार ज्ञापन किया। तेयुप, दिल्ली की तरफ से परिवार को मंगलभावना यंत्र भेंट किया गया।

विवाह संस्कार

दिल्ली।

कांतिलाल बैद राजलदेसर निवासी, गाजियाबाद (यूपी) प्रवासी की सुपुत्री सम्मति बैद का विवाह संस्कार नरेंद्र सांखला जालना निवासी परभणी महाराष्ट्र प्रवासी के सुपुत्र विनीत सांखला के साथ संस्कारक सुभाष दुगड़, भरत बेगवानी, सौरभ आंचलिया, महेंद्र श्यामसुखा ने विवाह संस्कार जैन संस्कार विधि से विधिपूर्वक व मंगल मंत्रोच्चार के साथ संपन्न करवाया।

संस्कारक महेंद्र श्यामसुखा ने सभी का आभार ज्ञापन किया। तेयुप, दिल्ली की तरफ से बैद व सांखला परिवार को मंगलभावना पत्रक भेंट किया गया।

दिल्ली।

राजेंद्र कुमार भंसाली, गंगाशहर निवासी, दिल्ली प्रवासी के सुपुत्र अंशुल भंसाली का विवाह संस्कार नरेश टुकराल आगरा निवासी की सुपुत्री कनिका टुकराल के साथ अध्यात्म साधना केंद्र महारौली में संस्कारक विमल गुनेचा, संस्कारक सौरभ आंचलिया, मनीष बरमेचा, महेंद्र श्यामसुखा ने विवाह संस्कार जैन संस्कार विधि से संपन्न करवाया।

तेयुप, दिल्ली की तरफ से भंसाली व टुकराल परिवार को मंगलभावना पत्रक भेंट किया गया।

नामकरण संस्कार

औरंगाबाद।

औरंगाबाद निवासी श्रेयांस-सोनिया सेठिया के पुत्र का नामकरण जैन संस्कार विधि द्वारा संस्कारक अंकुर लुणिया एवं विवेक बागरेचा ने संपूर्ण विधि-विधान एवं मंत्रोच्चार द्वारा संपन्न करवाया।

संस्कारक अंकुर लुणिया ने शुभकामनाएँ प्रेषित कर मंगलभावना यंत्र प्रदान किया। संस्कारकों ने सेठिया परिवार के प्रति आभार ज्ञापित किया।

इस अवसर पर पारिवारिकजन एवं समाज के गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

नूतन प्रतिष्ठान शुभारंभ

औरंगाबाद।

तारानगर निवासी, औरंगाबाद प्रवासी डॉ० विमलेश सेठिया के नव प्रतिष्ठान का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से संस्कारक अंकुर लुणिया एवं विवेक बागरेचा ने संपूर्ण कार्यक्रम को विधिवत् मंत्रोच्चार द्वारा संपन्न करवाया।

संस्कारकों ने सेठिया परिवार के प्रति आभार ज्ञापित किया।

फिजियोथैरेपी सेंटर का शुभारंभ

पर्वत पाटिया।

सीकर निवासी, सारोली, पर्वत पाटिया प्रवासी विमल भरतिया के सुपुत्र डॉ० महक जैन व फिजियोथैरेपी सेंटर का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से संस्कारक मनीष कुमार मालू, पवन कुमार बुच्चा व बजरंग बैद ने संपूर्ण विधि व मंगल मंत्रोच्चार से संपन्न करवाया।

डॉ० महक व उनके पूरे परिवार व भाभी जी ने संस्कारक व सभी पारिवारिकजनों का आभार ज्ञापन किया। तेयुप, पर्वत पाटिया द्वारा मंगलभावना पत्रक भेंट किया गया।



मनोनुशासनम्

□ आचार्य तुलसी □

पहला प्रकरण

मन की छह अवस्थाएँ



मन चेतना की वह अवस्था है जो बाहरी वातावरण और वृत्तियों से प्रभावित होता है। उसकी चंचलता सहज नहीं है किंतु बाह्य वातावरण और वृत्ति के योग से निष्पन्न है। चंचलता का मूल हेतु वृत्ति है। मनुष्य जो प्रवृत्ति करता है, वह अल्पकालिक होती है। प्रवृत्ति समाप्त हो जाती है, पीछे उसकी स्मृति रह जाती है। चंचलता का एक हेतु स्मृति है।

मनुष्य कल्पनाशील प्राणी है। वह मन ही मन भविष्य का स्वप्न संजोता रहता है। वे स्वप्न मन में चंचलता उत्पन्न करते हैं। चंचलता का एक हेतु कल्पना है।

मनुष्य इंद्रियों के माध्यम से बाह्य जगत् के साथ संपर्क करता है। यह बाह्य जगत् शब्द, रूप, गंध, रस और स्पर्शमय है। वह मन के अनुकूल और प्रतिकूल दोनों प्रकार का है। अनुकूल के प्रति आसक्ति और प्रतिकूल के प्रति द्वेष होता है। ये आसक्ति और द्वेष मन की चंचलता के वर्तमान हेतु हैं।

इस प्रकार स्मृति, कल्पना तथा आसक्ति और द्वेष—ये चारों आंतरिक वृत्तियाँ मन को चंचल करती रहती हैं। मन की स्थिरता का अर्थ है स्मृति का निरोध, कल्पना का निरोध, आसक्ति का निरोध और द्वेष का निरोध। मन की स्थिरता का अभ्यास क्रम है—स्मृति की शुद्धि, कल्पना की शुद्धि, आसक्ति की शुद्धि और द्वेष की शुद्धि।

जब आसक्ति और द्वेष तीव्रतम होते हैं तब दृष्टि और चारित्र्य दोनों विकारग्रस्त हो जाते हैं। उस स्थिति में मन का क्षोभ प्रबल हो जाता है।

प्रारंभ में मन को एक स्मृति की परंपरा में लगाने का अभ्यास किया जाए। इससे मन की गति एक प्रवाह में हो जाती है। ऊपर से ऊपर उभरने वाली स्मृतियाँ और कल्पनाएँ रुक जाती हैं। एक स्मृति की अविच्छिन्न धारा का अभ्यास हो जाने पर फिर कुंभक का अभ्यास किया जाए। उसमें स्मृति और कल्पना का निरोध हो जाता है। ध्येय के साथ तादात्म्य होने पर सहज ही कुंभक हो जाता है।

अनासक्ति के लिए अनित्य और एकत्व भावना का अभ्यास किया जाता है। द्वेष-निवृत्ति के लिए आत्मौपम्य की भावना या प्रेम का विकास किया जाए। इस प्रकार समुचित साधनों के द्वारा मन की चंचलता के कारण-भूत तत्त्वों का निरोध किया जा सकता है।

मूढ़ अवस्था में आसक्ति और द्वेष बहुत प्रबल होते हैं। मूढ़ अवस्था का मन बाह्य जगत् और परिस्थिति का प्रतिबिंब लेता रहता है इसलिए वह एकाग्र या स्थिर होने की दिशा में गति नहीं कर पाता।

मूढ़ अवस्था की भूमिका पार कर लेने पर व्यक्ति के मन में भीतर की ओर झाँकने की भावना जागृत होती है। वह इस भावना की पूर्ति के लिए अंतर्निरीक्षण अर्थात् ध्यान का प्रयोग प्रारंभ करता है। किंतु यह प्रयोग एक श्वास में ही सफल नहीं हो जाता है। इसकी सफलता के लिए इसे बहुत लंबी साधना व प्रतीक्षा करनी पड़ती है। जब वह अंतर्निरीक्षण का प्रारंभ करता है, तब मन जो पहले शांत-सा प्रतीत होता था और अधिक चंचल हो जाता है। मन को इधर-उधर चक्कर लगाते देख ध्याता के मन में विकल्प उठता है कि वह ध्यान करके एक शांत सर्प की पूँछ पग पग रख लेता है या सोए सिंह को ललकार लेता है। किंतु यह घबराने की स्थिति नहीं है। यह मन की स्थिरता की ओर बढ़ने वाला पहला चरण है। आपने अनुभव किया होगा कि जमे हुए कूड़े-करकट के ढेर में दुर्गंध नहीं आती किंतु उसे साफ करने के लिए आप खोदेंगे, उस समय दुर्गंध फूट पड़ेगी। यह शोधन का पहला चरण है। किसी व्यक्ति के पेट में मल संचित है, उसे सामान्यतः कष्ट का अनुभव नहीं होता किंतु जब वस्ति (ऐनीमा) के द्वारा मल का शोधन किया जाता है, तब वायु कुपित हो जाता है, पीड़ा भी बढ़ जाती है किंतु वह प्रकोप और पीड़ा शोधन की प्रक्रिया का प्रथम संकेत है। ठीक इसी प्रकार ध्यान के प्रारंभ-काल में जो मन की चंचलता बढ़ती है, वह ध्यान की दिशा में उठने वाला पहला पग है।

प्रारंभ में कुछ समय तक ध्याता ध्यान करने की मुद्रा में बैठ जाता है किंतु अंतर्निरीक्षण की स्थिति का उसे कोई अनुभव नहीं होता। किसी के लिए यह स्थिति थोड़े समय के लिए होती है और किसी-किसी के लिए लंबे समय तक चली जाती है। जो इस स्थिति से घबराकर अंतर्निरीक्षण के अभ्यास को छोड़ देता है वह बीच में ही रुक जाता है और जो इस स्थिति में घबराता नहीं है वह अगली भूमिकाओं में पहुँच जाता है।

विक्षिप्त की अगली भूमिका संधि की है। इस भूमिका में ध्याता का मन अंतर्निरीक्षण का अनुभव कर लेता है; यद्यपि वह उसमें लंबे समय तक टिक नहीं पाता। अंतर्निरीक्षण करते-करते फिर बाहर लौट आता है। फिर अंतर्निरीक्षण का प्रयत्न करता है और फिर बाहर लौट आता है। किंतु इस भूमिका में एक बड़ा लाभ यह होता है कि अंतर्निरीक्षण का जो द्वार बंद था, वह खुल जाता है।

अंतर्निरीक्षण का अभ्यास बढ़ते-बढ़ते मन एक विषय पर स्थिर रहने लग जाता है। इस भूमिका में ध्येय के साथ ध्याता का श्लेष हो जाता है। जिस प्रकार गोंद से दो कागज चिपक जाते हैं, उसी प्रकार ध्याता का ध्येय के साथ चिपकाव हो जाता है किंतु चिपके हुए दो कागज आखिर दो ही रहते हैं। उनमें एकात्मकता नहीं होती।

स्थिरता का अभ्यास क्रमशः बढ़ता है। उसकी वृद्धि एक दिन तन्मयता या लीनता के बिंदु तक पहुँच जाती है। यह मन की पाँचवीं अवस्था है। पानी दूध में मिलकर जैसे अपना अस्तित्व खो देता है, वैसे ही इस भूमिका में ध्याता ध्येय में इतना तन्मय हो जाता है कि उसे अपने अस्तित्व का भान ही नहीं रहता। यह स्थिति पहले ही चरण में प्राप्त नहीं होती किंतु पूर्वोक्त क्रम से निरंतर आगे बढ़ते रहने से एक दिन यह स्थिति अवश्य प्राप्त हो जाती है।

पाँचवीं भूमिका में मन की स्थिरता शिखर तक पहुँच जाती है। किंतु उसका (मन का) अस्तित्व या उसकी गति समाप्त नहीं होती। ध्याता ध्येय में लीन होकर कुछ समय के लिए जैसे अपने उपलब्ध अस्तित्व को भुला देता है किंतु ध्येय की स्मृति उसे बराबर बनी रहती है। छठी भूमिका में वह ध्येय की स्मृति भी समाप्त हो जाती है। इसका अर्थ यह है कि मन का अस्तित्व या उसकी गतिक्रिया समाप्त हो जाती है। यह निरालंबन ध्यान या सहज चैतन्य के उदय की भूमिका है। इसमें प्रत्यक्षानुभूति प्रबल हो जाती है, इसलिए इंद्रिय और मन जो परोक्षानुभूति के माध्यम हैं, अर्थहीन बन जाते हैं—समाप्त हो जाते हैं।

(क्रमशः)

साँसों का इकतारा

□ साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा □

(१२८)

नई दृष्टि दे युग जीवन में नई चेतना संचारी।
महिमामय उस महापुरुष की सदी बीसवीं आभारी।।

ग्यारह वर्षों की वय में जागा विराग कोमल मन में
गणमाली के संरक्षण में खिला फूल गण-उपवन में
अनुशासित जीवनशैली का असर निहारा बचपन में
बिना प्रशिक्षण सीखा रखना मुनियों को अनुशासन में
अनिमिष रहे देखते सुर-नर जिसकी मुद्रा मनहारी।।

सूरज बनने का सपना ले किरण एक नभ से उतरी
देख स्वाति का योग अचानक आसमान से बूँद गिरी
सागर बनने की उमंग से उठी लहर मन में गहरी
पौरुष की पूजा कर पल-पल दिव्य अर्हता सहज वरी
यौवन की देहरी पर जिसको मिली बड़ी जिम्मेदारी।।

आगम आस्था का आलंबन परंपरा को स्वीकारा
अनेकांत आलोक सहारे बदली चिंतन की धारा
नयनों में दुनिया सपनों की पर यथार्थ ही ध्रुवतारा
आँधी-तूफानों में जिसने नहीं कभी साहस हारा
कठिन कठिनतम अभियानों में रही सफलता सहचारी।।

था चैतन्य सृजन में अनुपम श्रुतदेवी सेवा करती
कलम रोशनी की थी कर में प्रतिभा खुद पानी भरती
गहराई में सागर पीछे सहनशीलता में धरती
उज्वलता आभामंडल की श्रांति कलाति सबकी हरती
रही समर्पित श्रीचरणों में अष्ट संपदा अविकारी।।

(१२९)

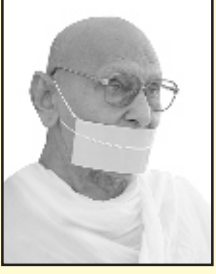
शक्तिपीठ यह नैतिकता का है अपूर्व इसका इतिहास।
मुखरित हैं इसके कण-कण में आस्था के उजले उच्छ्वास।।

सदी बीसवीं के युगनायक तुलसी का कर्तृत्व महान
अणुव्रत का अभियान सामायिक नैतिक मूल्यों का अवदान
जीवनशैली दी अलबेली दिया व्यवस्थित प्रेक्षाध्यान
शिक्षा का आयाम अनूठा प्रायोगिक जीवनविज्ञान
नए-नए नित चाँद उगाए मिला सहज विस्तृत आकाश।।

राजस्थानी शोधपीठ के साथ जुड़ा है तुलसी नाम
शोध सृजन का संगम सुंदर खुलते जाएँ नव आयाम
दिग्दंत में सौरभ फैले केंद्र बने अद्भुत अभिराम
निष्ठा जागे विज्ञानों की हो जाए जग विश्रुत धाम
दिव्य दृष्टियाँ मिले यहाँ से खिले शिशिर में भी मधुमास।।

जन्म सदी की दस्तक दर पे हो कृतज्ञता का इजहार
महाप्रज्ञ की भव्य योजना विजडम वर्ल्ड बने साकार
संयम से व्यक्तित्व बनेगा जन-जन में जागे विश्वास
नैतिकता के शक्तिपीठ पर नई शक्ति का हो आभास
महाश्रमण की मंगल सन्निधि पोर-पोर में भरे उजास।।

(क्रमशः)



संबोधि

□ आचार्य महाप्रज्ञ □ बंध-मोक्षवाद

मिथ्या-सम्यग्-ज्ञान-मीमांसा

भगवान् प्राह

(३१) मायाञ्च निकृतिं कृत्वा, कृत्वा चासत्यभाषणम्।
कूटं तोलं न मानञ्च, जीवस्तिर्यग्गतिं व्रजेत्॥

तिर्यच-पशु-पक्षी आदि की गति में उत्पन्न होने के चार कारण हैं—(१) कपट, (२) प्रवंचना, (३) असत्य-भाषण और (४) कूट तौल-माप।

इन चार श्लोकों में नरक, स्वर्ग, मनुष्य और तिर्यच—इन चार गतियों की प्राप्ति के चार-चार कारण निर्दिष्ट हैं। इनके अध्ययन से यह सहज पता लग सकता है कि किस अध्यवसाय वाले प्राणी किस योनी में जाते हैं। कर्म का फल अवश्य होता है—यह जैन दर्शन का ध्रुव तथ्य है। अपने-अपने कर्मों के अनुसार व्यक्ति जन्म-मरण करता है। उपर्युक्त निर्दिष्ट कारण एक संकेत मात्र हैं। वे तथा उन जैसे अनेक कारणों के संयोग से व्यक्ति को वे-वे योनियाँ प्राप्त होती हैं। केवल ये ही कारण नियामक नहीं हैं। नरक जाने का एक हेतु मांसाहार है किंतु मांस खाने वाले सभी व्यक्ति नरक में ही जाते हों, ऐसी नियामकता नहीं है। यह तथ्य अवश्य है कि मांसाहार व्यक्ति में क्रूरता पैदा करता है और उससे कर्म-परंपरा तीव्र होती चली जाती है।

अतः इन कारणों के आलोक में हमें स्पष्ट जान लेना चाहिए कि गति की प्राप्ति में किन-किन अध्यवसायों या प्रवृत्तियों का क्या-क्या परिणाम होता है।

(३२) शुभाशुभाभ्यां कर्माभ्यां, संसारमनुवर्तते।
प्रमादबहुलो जीवोऽप्रमादेनान्तमृच्छति॥

प्रमादी जीव शुभ और अशुभ कर्मों के द्वारा संसार में अनुवर्तन करता है और अप्रमादी जीव संसार का अंत कर देता है।

(क्रमशः)

अवबोध

□ मंत्री मुनि सुमेरुमल 'लाडनू' □ धर्म बोध

तप धर्म

प्रश्न २६ : क्या मिथ्यात्वी की तपस्या संसार वृद्धि का कारण है?

उत्तर : संसार वृद्धि मोह कर्म के उदय से होती है और तपस्या मोह कर्म के क्षयोपशम से होती है। यह काया का शुभयोग है। क्षयोपशम से की जाने वाली तपस्या संसार वृद्धि का हेतु कैसे हो सकती है? यह तो आत्म उज्वलता का कारण बनती है।

प्रश्न २७ : तपस्या कितने भाव कितनी आत्मा?

उत्तर : तपस्या भाव-चार-उदय को छोड़कर आत्मा-एक-योग।

प्रश्न २८ : क्या तप के कई प्रकार हैं?

उत्तर : तपस्या करने के १०८ प्रकार उपलब्ध होते हैं, जैसे—रोहिणी तप, कनकावली तप, भद्र महाभद्र, प्रतिमा आदि। इनमें तप करने की विविध पद्धतियाँ हैं। रोहिणी तप, सोलिया तप, चूड़ा तप मध्यवर्ती युग में यतिजनों द्वारा प्रतिपादित व विकसित है। पचरंगी, सतरंगी नाम से तपस्या का क्रम तेरापंथ धर्मसंघ में ही अधिक प्रचलित हैं। प्राप्त इतिहास के अनुसार सं० १६२५ में जयाचार्य ने जोधपुर में पचरंगी, सतरंगी नामक तपस्या का शुभारंभ किया था। जय सुजश के अनुसार लाडनू में बहिनों में एक साथ १३ पचरंगियाँ हुई थीं।

प्रश्न २९ : क्या भौतिक अभिसिद्धि के लिए भी तपस्या की जा सकती है?

उत्तर : भौतिक अभिसिद्धि के लिए तपस्या हो सकती है। दस रुपये की वस्तु सौ रुपयों में क्यों नहीं मिलती, किंतु वह वस्तु खरीदने वाला मूर्ख कहलाता है। भौतिक उपलब्धि में तप व जप की प्रधानता होती है, किंतु दस रुपये मूल्य की वस्तु के लिए वह सौ रुपये देने की बात होगी। राजा रावण के बहुरूपिणी विद्या के लिए आठ दिनों की तपस्या करने का उल्लेख मिलता है। वासुदेव श्रीकृष्ण, महामंत्री अभयकुमार तथा चक्रवर्ती आदि ने भी देव-सहयोग के लिए तेले किए थे।

(क्रमशः)

उपासना

(भाग - एक)



□ आचार्य महाश्रमण □

आचार्य तुलसी

स्थानांग में सात निहवों का ही उल्लेख है। जिनभद्रगणी आठवें निहव बोटिक का उल्लेख और करते हैं, जो वस्त्र त्यागकर संघ से पृथक् हुए थे।

आचार्य	मत-स्थापना	उत्पत्ति-स्थान	कालमान
(१) जमाली	बहुरतवाद	श्रावस्ती	कैवल्य के १८ वर्ष पश्चात्
(२) तिष्यगुप्त	जीवप्रादेशिकवाद	ऋषभपुर	कैवल्य के १८ वर्ष पश्चात्
(३) आपाढ-शिष्य	अव्यक्तवाद	श्वेतविका	निर्वाण के ११४ वर्ष पश्चात्
(४) अश्वमित्र	सामुच्छेदिकवाद	मिथिला	निर्वाण के २२० वर्ष पश्चात्
(५) गंग	द्वैक्रियवाद	उल्लुकातीर	निर्वाण के २२८ वर्ष पश्चात्
(६) रोहगुप्त	त्रैराशिकवाद	अंतरंजिका	निर्वाण के ५५४ वर्ष पश्चात्
(७) गोष्ठाहाहिल	अबद्धिकवाद	दशपुर	निर्वाण के ६०६ वर्ष पश्चात्

श्वेतांबर-दिगंबर

दिगंबर-संप्रदाय की स्थापना कब हुई, यह अब भी अनुसंधान सापेक्ष है। परंपरा से इसकी स्थापना वीर निर्वाण की छठी-सातवीं शताब्दी में मानी जाती है। श्वेतांबर नाम कब पड़ा—यह भी अन्वेषण का विषय है। श्वेतांबर और दिगंबर दोनों सापेक्ष शब्द हैं। इनमें से एक का नामकरण होने के बाद ही दूसरे के नामकरण की आवश्यकता हुई।

भगवान् महावीर के संघ में सचेल और अचेल दोनों प्रकार के श्रमणों का समवाय था। आचारांग में सचेल और अचेल दोनों प्रकार के श्रमणों का वर्णन है।

सचेल मुनि के लिए वस्त्रेषणा का वर्णन आचार्यचूला में है। उत्तराध्ययन में अचेल और सचेल दोनों अवस्थाओं का उल्लेख है। आगमकाल में अचेल मुनि जिनकल्पिक और सचेल मुनि स्थविरकल्पिक कहलाते थे।

भगवान् महावीर के महान् व्यक्तित्व के कारण आचार्य की द्विविधता का जो समन्वित रूप हुआ, वह जंबू स्वामी तक उसी रूप में चला। उनके पश्चात् आचार्य-परंपरा का भेद मिलता है। श्वेतांबर-पट्टावलि के अनुसार जंबू के पश्चात् प्रभव, शय्यम्भव, यशोभद्र, संभूतविजय और भद्रबाहु हुए और दिगंबर मान्यता के अनुसार नंदी, नंदीमित्र अपराजित, गोवर्धन और भद्रबाहु हुए।

जंबू के पश्चात् कुछ समय तक दोनों परंपराएँ आचार्यों का भेद स्वीकार करती हैं और भद्रबाहु के समय फिर दोनों एक बन जाती हैं। इस भेद और अभेद से सैद्धांतिक मतभेद का निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता। उस समय संघ एक था। फिर भी गण और शाखाएँ अनेक थीं। आचार्य और चतुर्दशपूर्वी भी अनेक थे। किंतु प्रभवस्वामी के समय से ही कुछ मतभेद के अंकुर फूटने लगे हों, ऐसा प्रतीत होता है।

शय्यम्भव ने दशवैकालिक में 'वस्त्र रखना परिग्रह नहीं है'—इस पर जो बल दिया है और ज्ञातपुत्र महावीर ने संयम और लज्जा के निमित्त वस्त्र रखने को परिग्रह नहीं कहा है—इस वाक्य द्वारा भगवान् के अभिमत को साक्ष्य किया है। उससे आंतरिक मतभेद की सूचना मिलती है। कुछ शताब्दियों के पश्चात् शय्यम्भव का 'मुच्छा परिग्रहो वुत्तो' वाक्य परिग्रह की परिभाषा बन गया। उमास्वाति का 'मूर्च्छा परिग्रहः'—यह सूत्र इसी का उपजीवी है।

जंबू स्वामी के पश्चात् 'दस वस्तुओं' का लोप माना गया है। उनमें एक जिनकल्पिक अवस्था भी है। यह भी परंपरा-भेद की पुष्टि करता है। भद्रबाहु के समय (वी०नि० १६० के लगभग) पाटलिपुत्र में जो वाचना हुई, उन दोनों परंपराओं का मतभेद तीव्र हो गया। इससे पूर्व श्रुतविषयक एकता थी। किंतु लंबे दुष्काल में अनेक श्रुतधर मुनि दिवंगत हो गए। भद्रबाहु की अनुपस्थिति में ग्यारह अंगों का संकल्प किया गया। वह सबको पूर्ण मान्य नहीं हुआ। दोनों का मतभेद स्पष्ट हो गया। माथुरी वाचना में श्रुत का जो रूप स्थिर हुआ, उसका अचेलत्व-समर्थकों ने पूर्ण बहिष्कार कर दिया। इस प्रकार आचार्य और श्रुत विषयक मतभेद तीव्र होते-होते वीर-निर्वाण की छठी-सातवीं शताब्दी में एक मूल दो भागों में विभक्त हो गया।

(क्रमशः)



टीपीएफ के विविध आयोजन



कैरियर मार्गदर्शन कार्यशाला

नागपुर।

टीपीएफ, नागपुर द्वारा कैरियर मार्गदर्शन कार्यशाला राजेंद्र हाईस्कूल व जूनियर कॉलेज में आयोजित की गई।

कार्यक्रम की शुरुआत में टीपीएफ के अध्यक्ष सीए प्रियंक जैन ने कैरियर का चयन व इसके महत्त्व को समझाया। उन्होंने टीपीएफ व कैरियर काउंसलिंग कार्यक्रम उत्कर्ष के बारे में जानकारी दी। स्कूल मैनेजमेंट को कैरियर गाइडेंस हेतु पुस्तकें भी भेंट की गईं।

प्रेरणा कोटेचा ने बताया कि कैरियर कोई भी हो उसमें हमारी क्षमता पूर्ण रूप से दिखनी चाहिए। जिस व्यक्ति की रुचि जिस क्षेत्र में रहती है, उसी में कैरियर काउंसलिंग की मदद से एक स्पष्ट सोच

विकसित की जा सकती है जो उसे तरक्की करने में मदद करती है।

सीए विवेक पारख ने वाणिज्य क्षेत्र में कैरियर के विकल्पों के बारे में बताया। उन्होंने सीए, सीएस, एमबीए, बीबीए ऐसे अनेक विकल्पों के बारे में बताया।

गवर्नमेंट आयुर्वेद कॉलेज की डॉ० सुमिता जोगड़ ने मेडिकल एवं पैरामेडिकल कोर्स के बारे में जानकारी दी। यदि मेडिकल फील्ड में कैरियर होकर भी डॉक्टर नहीं बन सकते हैं, तो कई सारे पैरामेडिकल कोर्सेस हैं। इन पैरामेडिकल कोर्सेस में स्टाफ की आज अत्यंत आवश्यकता है। पैरामेडिकल स्टाफ के बिना मेडिकल व्यवसाय अधूरा है। १५० से अधिक विद्यार्थियों ने इस कार्यक्रम का

लाभ लिया।

मुख्य अतिथि मोहन नाहतकर ने विद्यार्थी को तीन डी को जीवन में याद रखने की सलाह दी। डिवोशन, डेटर्मिनेशन और डेडिकेशन। सफलता के लिए अपने पैशन का पालन करें।

टीपीएफ की ओर से कार्यक्रम में आए सभी अतिथि स्पीकर्स एवं बच्चों का आभार व्यक्त सलाहकार शिवाली पुगलिया ने किया।

कार्यक्रम में टीपीएफ के सदस्य डॉ० गौतम जोगड़ तथा सीए प्रतिभा दफ्तरी भी उपस्थित थे। स्कूल टीचर ज्योत्सना इटंकर तथा भावना सलामे ने कार्यक्रम का संचालन किया।

केंद्रीय बजट-२०२३-२४ पर कार्यशाला का आयोजित

नागपुर।

टीपीएफ, नागपुर ने केंद्रीय बजट-२०२३-२४ का सफलतापूर्वक सत्र आयोजित किया। कार्यक्रम का आयोजन तेरापंथ भवन में किया गया।

टीपीएफ, नागपुर के अध्यक्ष सीए प्रियंक जैन ने प्रमुख अतिथि, प्रख्यात वक्ताओं और दर्शकों का स्वागत किया। उन्होंने दर्शकों को बजट-२०२३-२४ की प्रमुख नीतियों के बारे में बताया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि अनंत ने सीजीएसटी अधिनियम में नई धारा-१५८-ए के बारे में दर्शकों का मार्गदर्शन किया। इस धारा में जीएसटी डेटा को डिजिटल रूप से साझा करने की अनुमति दी गई है।

अतिथि वक्ता सीए प्रेमलता डागा साबू ने केंद्रीय बजट-२०२३ की मुख्य विशेषताएँ साझा कीं। उन्होंने प्रत्यक्ष कर में विभिन्न संशोधनों के बारे में चर्चा की। नई कर व्यवस्था को अब डिफॉल्ड व्यवस्था बना दिया गया है। हालाँकि, करदाता के पास पुरानी कर व्यवस्था में बने रहने का विकल्प रहेगा।

अतिथि वक्ता सीए जय पोपटानी ने अप्रत्यक्ष कर के संशोधन पर प्रकाश डाला। उन्होंने अनुपालन के बोझ को कम करने के लिए कम कर दरों के साथ कर संरचना के सरलीकरण की आवश्यकता के बारे में बताया।

अंत में सवाल-जवाब सत्र हुआ, जिसमें आए हुए श्रोताओं ने अपनी जिज्ञासा का समाधान पाया और इसके पश्चात कार्यक्रम का समापन हुआ। टीपीएफ, नागपुर की सचिव एडवोकेट शिवाली पुगलिया ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

सीए विवेक पारख कार्यक्रम के संयोजक थे।

कार्यक्रम में गणमान्य व्यक्तियों, टीपीएफ के पूर्व अध्यक्ष सीए आदित्य कोठारी, सीए सौरभ दफ्तरी, सक्षम दुगड़ के साथ सभा सदस्य, तेयुप और टीपीएफ सदस्य शामिल हुए।

कार्यक्रम का संचालन सीए प्रतिभा दफ्तरी ने किया।

केंद्रीय बजट चर्चा का खुला सत्र का आयोजन

चेन्नई।

टीपीएफ, चेन्नई चेप्टर द्वारा बजट-२०२३ की व्याख्या और निवेश के उभरते अवसर विषयक गुरु श्री शांति जैन कॉलेज, वेपेरी, चेन्नई में खुला सत्र रखा गया। नमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। टीपीएफ अध्यक्ष प्रसन्न बोथरा ने स्वागत भाषण दिया। डॉ० दिनेश धोका ने टीपीएफ की गतिविधियों पर प्रकाश डाला।

वित्तमंत्री सीतारमण द्वारा पिछले दिनों संसद में रखे गए प्रस्तावित केंद्रीय बजट के विभिन्न पहलुओं पर व्यावहारिक सत्र आयोजित किया। जिसमें टीपीएफ, चेन्नई के ही सदस्यों ने बारीकियों के साथ जानकारी दी।

अजेश सकलेचा ने निवेश के विभिन्न अवसरों पर प्रकाश डाला और आज की

दुनिया में स्टार्टअप के महत्त्व का भी उल्लेख किया।

सीए अजीत चोरड़िया ने प्रत्यक्ष कर और व्यक्तियों के लिए नए प्रस्तावित आयकर ढाँचे के बारे में विस्तार से बताया।

सीए विनोद कोठारी ने जीएसटी संशोधनों एवं जीएसटी नोटिसों और आदेशों के विश्लेषण पर प्रकाश डाला। उन्होंने एलजीडी (प्रयोगशाला में विकसित हीरे) के बारे में भी बात की, जिसका वित्तमंत्री ने बजट में विशेष उल्लेख किया था।

प्रश्नोत्तर सत्र के दौरान वक्ताओं ने प्रतिभागियों के प्रश्नों का भी उत्तर दिया। टीपीएफ ने आयोजन स्थल व व्यवस्थाओं के लिए जीएसएस जैन स्कूल व कॉलेज के प्रबंधन व बोर्ड को धन्यवाद दिया। कार्यक्रम संयोजक सीए विवेक बोथरा ने धन्यवाद

ज्ञापन किया। प्री रजिस्ट्रेशन के साथ समायोजित कार्यक्रम की श्रोताओं ने सराहना की और रजिस्ट्रेशन बंद होने के कारण जो भाग नहीं ले पाए, उन्होंने ऐसे सत्रों को और लगाने का निवेदन किया। इस तीन घंटे चले सत्र में वक्ताओं ने सभी को अपनी अधिकतम जानकारी देकर बाँधे रखा। टीपीएफ द्वारा सभी वक्ताओं को प्रतीक चिह्न देकर सम्मानित किया।

इस अवसर पर टीपीएफ, चेन्नई चेप्टर की टीम के साथ राष्ट्रीय टीपीएफ सदस्य दिनेश धोका और डॉ० कमलेश नाहर ने अपनी उपस्थिति दर्ज करवाई। तेरापंथ धर्मसंघ की संघीय संस्थाओं के पदाधिकारियों ने भी सहभागिता दर्ज करवा टीपीएफ का हौसला बढ़ाया।

गर्व है तेरापंथी होने का

विजयवाड़ा।

तेरापंथ भवन में मुनि दीप कुमार जी के सान्निध्य में 'गर्व है तेरापंथी होने का' कार्यशाला का आयोजन तेरापंथी सभा, विजयवाड़ा द्वारा किया गया। कार्यक्रम में उपस्थिति अच्छी रही।

मुनि दीप कुमार जी ने कहा कि तेरापंथ गौरवशाली धर्मसंघ है। इसका केंद्रीय तत्त्व है—अनुशासन।

संघ में आचार्यश्री के अनुशासन को सब साधु-साध्वियाँ सहर्ष स्वीकार करते हैं। उन्हीं संस्कारों में वे पलते हैं। तेरापंथ को मानने वाले हर व्यक्ति का अनुशासन के सामने सिर झुकता है। संघ का प्राण है—अनुशासन। त्राण है—अनुशासन। तेरापंथ की जो सुषमा है, सौंदर्य है, सत्यं, शिवं, सुंदरम तीनों का योग है। उसका मूल कारण है—अनुशासन।

मुनिश्री ने आगे कहा कि हम तेरापंथी होने का गौरव अनुभव करें। अपने आपको आचार्य भिक्षु का अनुयायी मानें। साथ-साथ यह भी सोचें कि इस गर्व करने का तथा आस्था का एक मूल कारण है—अनुशासन। आचार्य भिक्षु से लेकर वर्तमान में आचार्यश्री महाश्रमण जी तक ने अनुशासन को महत्त्व दिया है।

मुनिश्री ने श्रावक समाज के महत्त्व को प्रतिपादित करते हुए जैन और तेरापंथ के संस्कारों को मजबूत करने की प्रेरणा देते हुए विभिन्न विषयों की बात कही।

मुनि काव्य कुमार जी ने तेरापंथ की एक ऐतिहासिक घटना के माध्यम से बताया कि तेरापंथ होने का गर्व हमें कैसे करना चाहिए। कार्यक्रम में अणुव्रत समिति द्वारा पूर्व में आयोजित प्रतियोगिता के प्रमाण-पत्र वितरित किए गए।

पिकनिक के साथ कार्यक्रम का आयोजन

मुंबई।

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण जी के मुंबई पदार्पण के अंतर्गत अणुव्रत समिति, मुंबई द्वारा अपने स्तर पर पूरे अणुव्रत परिवार के साथ बड़े जोश, उमंग और उल्लास के साथ तैयारियों की जा रही हैं। मोंटेरिया विलेज में पिकनिक के साथ कार्यक्रम का आयोजन हुआ। शुरुआत अणुव्रत गीत के संगान द्वारा की गई। अणुव्रत समिति, मुंबई की अध्यक्षा कंचन सोनी ने कहा कि अणुव्रत समिति, मुंबई के सभी पदाधिकारियों की सहभागिता से, पूज्यप्रवर के मुंबई पदार्पण के अवसर पर नई उमंग, नई तरंग कार्यक्रम में आह्वान किया।

मंत्री वनीता बाफना ने आगामी कार्यक्रमों की जानकारी दी।

कार्यक्रम को सफल बनाने में मनोहर कच्छारा ठाणे का विशेष सहयोग रहा। जिसमें उनके परिवार को मोमेंटो द्वारा सम्मानित किया गया। अणुविभा उपाध्यक्ष विनोद कोठारी, महाराष्ट्र प्रभारी, रमेश धोका, मुंबई उपाध्यक्ष रोशन मेहता सहित अनेक पदाधिकारीगण एवं सदस्यों की उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन एवं आभार ज्ञापन मंत्री वनीता बाफना ने किया।

♦ समता की साधना के द्वारा आधि और उपाधि से मुक्त हुआ जा सकता है तथा उससे व्याधि की जड़ें भी निर्मूल हो सकती हैं।

— आचार्यश्री महाश्रमण

मर्यादा महोत्सव का आयोजन

केलवा।

मुनि संजय कुमार जी, मुनि प्रसन्न कुमार जी एवं साध्वी विशदप्रज्ञा जी के संयुक्त सान्निध्य में भिक्षु विहार के महाप्रज्ञ होल में १५६वें मर्यादा महोत्सव श्रद्धा के साथ मनाया गया। विमला चपलोट, रेखा व किरण कोठारी द्वारा भिक्षु अष्टकम् से कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। साध्वीवृंद द्वारा सामूहिक मर्यादा गीत का संगान किया गया। महिला मंडल, केलवा एवं विमला चपलोट ने मधुर गीत का गायन किया।

इस अवसर पर साध्वी प्रशमयशा जी, मुनि धैर्यकुमार जी ने मर्यादा से संबंधित महत्त्वपूर्ण विचार व्यक्त किए। मुनि संजय कुमार जी ने कहा कि मर्यादा में रहने वाला सुरक्षित रहता है वह अपना भी विकास करता है और दूसरों के लिए भी कल्याणकारी बन जाता है। अतः हमें मर्यादा में रहना चाहिए।

मुनि प्रसन्न कुमार जी ने कहा कि तेरापंथ का इतिहास जीवित जागृत इतिहास है हमें इस बात की प्रसन्नता है कि आज पहली बार केलवा की ऐतिहासिक धन्य धरा पर सामूहिक मर्यादा महोत्सव हमारे सान्निध्य में मनाया जा रहा है।

इससे पूर्व विदुषी साध्वी विशदप्रज्ञा जी ने कहा कि तेरापंथ एक प्राणवान मर्यादा निष्ठ एवं संगठित धर्मसंघ है। इस धर्मसंघ की नींव में आचार्य भिक्षु का बलिदान बोल रहा है।

मुनि सिद्धप्रज्ञ जी ने कहा कि मर्यादा पतंग की डोर के समान है जब तक पतंग की डोर हाथ में रहती है उसको कहीं भी मोड़ा जा सकता है। नियंत्रित किया जा सकता है। अभी तक के इतिहास में तेरापंथ के किसी भी आचार्य ने इस धरा पर मर्यादा महोत्सव नहीं किया। धन्य होगा वो दिन जब आचार्यप्रवर महोत्सव करेंगे।

इस अवसर पर विभिन्न संस्थाओं से जुड़ी हुई राजसमंद से समागत लता मादरेचा एवं तेममं, केलवा की अध्यक्ष संगीता कोठारी ने विचारों की अभिव्यक्ति दी। प्रारंभ में तेरापंथ सभा केलवा के अध्यक्ष सुभाष कोठारी ने स्वागत भाषण दिया। उपासिका मीना चपलोट ने आभार ज्ञापित किया।

कार्यक्रम में रीछेड़, राजसमंद, कांकरोली, पडासली, आमेट, मुंबई आदि क्षेत्र से श्रद्धालुओं ने उपस्थिति दर्ज कराई। कार्यक्रम का संचालन मुनि सिद्धप्रज्ञ जी ने किया। कार्यक्रम के अंत में सामूहिक विधिपूर्वक संघान किया गया। इस अवसर पर भिक्षु भूमि के अध्यक्ष रोशनलाल शांखला, तेयुप के अध्यक्ष विकास बोहरा, भिक्षु विहार के अध्यक्ष महेंद्र कोठारी आदि गणमान्य महानुभाव विशेष रूप से उपस्थित थे।

पचरंगी तप अभिनंदन समारोह

लिलुआ।

मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में एवं लिलुआ तेरापंथी सभा के द्वारा पचरंगी तप अभिनंदन समारोह का आयोजन तेरापंथ भवन में किया गया।

इस अवसर पर मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा कि जिनशासन में आत्म शुद्धि के चार उपाय बताए गए हैं। उसमें एक महत्त्वपूर्ण उपाय सम्यग् तप है। तप कर्म निर्जरा का साधन है। तप ज्वाला नहीं ज्योति है, विग्रह नहीं अनुग्रह है, दमन नहीं शमन है। मुनिश्री ने आगे कहा कि तप मन, वचन, काया रूपी योगों को स्वस्थ बनाता है और उपयोग को सम्यक् बनाता है। तप के साथ स्वाध्याय, ध्यान, जप आदि का योग हो तो सोने में सुहागा जैसी कहावत चरितार्थ होती है। मुनिश्री ने कहा कि लिलुआ आदि क्षेत्रों की सक्रियता से ही पचरंगी तप बिना मौसम में होना अपने आपमें विलक्षण है।

बाल मुनि कुणाल कुमार जी ने तप प्रेरणा गीत प्रस्तुत किया। इस अवसर पर भिक्षु भजन मंडली द्वारा तप अनुमोदना गीत प्रस्तुत किया गया। स्वागत भाषण लिलुआ, तेरापंथी सभा के अध्यक्ष प्रमिल बाफना ने दिया।

इस अवसर पर भीखमचंद पुगलिया, राजकरण सिरोहिया, कटक सभा के अध्यक्ष मोहनलाल सिंधी, अमरचंद सेठिया, तेयुप के अध्यक्ष अमित बांठिया, तेममं की अध्यक्ष बेला पोरवाल ने तप अनुमोदना में अपने विचार व्यक्त किए। पंचोला तप के तपस्वी आनंद लुणिया, मंजु घोड़ावत ने तपस्या के अनुभव सुनाते हुए विचार व्यक्त किए। आभार ज्ञापन तेरापंथी सभा के मंत्री रोशन चोपड़ा ने व कार्यक्रम का संचालन मुनि परमानंद जी ने किया।

आध्यात्मिक मिलन समारोह का आयोजन

वाशी।

शासनश्री साध्वी विमलप्रज्ञा मानखुर्द से विहार कर एवं साध्वी पंकजश्री जी विहार कर अणुव्रत सभागार, वाशी में पधारे।

शासनश्री साध्वी विमलप्रज्ञा जी, शासनश्री जिनरेखाजी, साध्वी पंकजश्री जी, साध्वी काव्यलता जी का नए भवन, वाशी में पगलिया व मंगल पाठ हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र से हुई।

मंगलाचरण, वाशी महिला मंडल द्वारा किया गया। तेरापंथी सभा अध्यक्ष वाशी विनोद बाफना एवं तेरापंथी सभा, मुंबई के कार्याध्यक्ष नवरत्न गन्ना ने स्वागत वक्तव्य दिया।

शासनश्री साध्वी विमलप्रज्ञा जी ने कहा कि हम सौभाग्यशाली हैं कि हमें तेरापंथ शासन मिला, एक गुरु के अनुशासन में धर्मसंघ दिन-प्रतिदिन गति-प्रगति कर रहा है। साध्वी काव्यलता जी ने कहा कि तेरापंथ

धर्मसंघ एक रमणीय उद्यान है, उद्यान के प्रत्येक फूल अपनी महक से परिपार्श्व हो सुरभित करते हैं। साध्वी विमलप्रज्ञा जी एक विशिष्ट पुष्प हैं। साध्वी पंकजश्री जी ने कहा कि वाशी एक श्रद्धा का केंद्र है। चार-चार सिंघाड़ों का मिलन प्रथम बार हुआ। इस दृश्य को देखकर मैं भाव-विभोर हूँ।

शासनश्री साध्वी जिनरेखा जी ने कहा कि आज हमारे आँगन में साध्वी विमलप्रज्ञा जी का आगमन खुशियों की बहार लेकर आया। हमारे धर्मसंघ में विदुषी सहज, सरल, सौम्यतायुक्त साध्वी विमलप्रज्ञा जी का स्वागत कर बासों उछल रहा है।

साध्वीवृंद ने गीतिका की प्रस्तुति दी। साध्वी ललिताश्री जी, साध्वी शारदाप्रभा जी, साध्वी सम्यक्त्वयशा जी ने गूगल बाबा की नाटिका के द्वारा स्वागत किया। मंच का संचालन साध्वी ज्योतिशशा जी ने किया। कार्यक्रम में तेरापंथी महासभा

कार्यकारिणी सदस्य तनसुख चोरड़िया, प्रवास व्यवस्था समिति, मुंबई महामंत्री महेश बाफना, तेरापंथी सभा, मुंबई के पूर्व अध्यक्ष नरेंद्र तातेड़, अभातेममं कार्यकारिणी सदस्य निर्मला चंडालिया, आचार्यश्री भिक्षु महाश्रमण फाउंडेशन, महामंत्री बाबूलाल बाफना सहित अनेक सभा-संस्थाओं के पदाधिकारीगण एवं अन्य गणमान्य श्रावक समाज की उपस्थिति रही।

कोपरखैरने, नेरुल, मुलुंड, डोंबिवली, उरण, कोटा विभिन्न क्षेत्र से भी श्रावक-श्राविका उपस्थित रहे। कार्यक्रम को सफल बनाने में तेयुप अध्यक्ष महावीर सोनी, मंत्री महावीर हिरण, कोषाध्यक्ष विनोद बाफना, पंकज चंडालिया, हरीश गाविया, अमित आंचलिया, जितेंद्र बाफना प्रवीण चोरड़िया, राजू कावड़िया, महिला मंडल संयोजिका इंदु बड़ाला, सह-संयोजिका अनिता चपलोट, नवीता मेहता, पूनम परमार का सहयोग रहा।

दर्पण जैसा जीवन जीना सीखें

चंडीगढ़।

कला की उत्पत्ति भी मनुष्य की सौंदर्योपासना का परिणाम है। लेकिन मनुष्य-समाज की अन्य प्रवृत्तियाँ जैसे-जैसे जटिल बनती जाती हैं, वैसे-वैसे कला की धारणा में भी परिवर्तन होता रहता है। मनुष्य की मूल प्रवृत्ति आत्मरक्षा है, इसलिए उसकी चेष्टा अपनी जान बचाने के साधन एकत्र करने की है। अन्न और वस्त्र जीवन-यापन के मुख्य साधन हैं। यही कारण है कि हम कृषि और कटाई को मूल उद्योग मानते हैं। किंतु मनुष्य की जिंदगी व्यक्तिगत ही नहीं है। उसकी सामाजिक जिंदगी भी है। उसी प्रकार सफाई को सामाजिक जिंदगी का मूल उद्योग मानना पड़ेगा। यह विचार मनीषी संत मुनि विनय कुमार जी 'आलोक' ने अणुव्रत भवन, तुलसी सभागार में व्यक्त किए।

मुनिश्री ने आगे कहा कि जरूरत है हम दर्पण जैसा जीवन जीना सीखें। उन सभी वातायनों और खिड़कियों को बंद कर दें, जिनसे आने वाली गंदी हवा इंसान नहीं रहने देती।

शिक्षा का उद्देश्य हो जीवन का सर्वांगीण विकास

कुकोरोड।

शिक्षा का उद्देश्य जीवन का सर्वांगीण विकास होना चाहिए। एकांगी विकास घातक हो सकता है। शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और भावनात्मक—इन चारों का जब विकास होता है तब पूर्ण विकास कहलाता है। शिक्षा के इस युग में शारीरिक और बौद्धिक विकास पर बल दिया जा रहा है जबकि मानसिक और भावनात्मक विकास नहीं होने से आज के विद्यार्थी गुस्सैल, आग्रही और जिद्दी बनते जा रहे हैं। जीवन विज्ञान शिक्षा का एक ऐसा आयाम है जिसके द्वारा बच्चों को जीने की कला का बोध दिया जा रहा है।

जीवन विज्ञान के माध्यम से विद्यार्थियों को अनुशासन, विनम्रता, सहिष्णुता, सौहार्द, स्नेह सहयोग जैसे मूलभूत गुणों का रचनात्मक पाठ पढ़ाया जाता है, जिससे उनका जीवन उन्नति की ओर अग्रसर होता है। ये विचार राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय कुकोरोड में अपने संबोधन में व्यक्त किए।

मुनि अमन कुमार जी ने आगे कहा कि आज के टेक्नोलॉजी और इलेक्ट्रॉनिक युग में छोटे-छोटे बच्चों में मोबाइल फोन का बहुत आकर्षण है। मोबाइल फोन बुरा है, ऐसा मैं नहीं मानता किंतु इसका अत्यधिक उपयोग और दुरुपयोग होने से परिणाम घातक आ रहे हैं। अतः विद्यार्थी जीवन में इससे बचने का प्रयास करना चाहिए।

इस अवसर पर विद्यालय के प्रधानाचार्य हनुमानलाल वैष्णव, वरिष्ठ व्याख्याता किसना राम घोटिया, जितेंद्र कुमार जांगिड़ ने मुनि अमन कुमार जी का स्वागत व अभिनंदन करते हुए अपने विचार व्यक्त किए। पृथ्वी सिंह, प्रह्लाद राम, राजेश कुमार, राजूराम केशुराम, पिंकी चावला, नंदकिशोर, घम्मी बाई मीणा सहित कई गणमान्यजन उपस्थित रहे। कार्यक्रम के संयोजन में बड्सू से धनपत जेतमाल का विशेष योगदान रहा।

ज्ञानशाला की सार-संभाल

सैंथिया।

तेरापंथी सभा, सैंथिया के अंतर्गत सैंथिया ज्ञानशाला की सार-संभाल का कार्यक्रम श्रमभ भवन में वृहद कोलकाता दक्षिण बंगाल ज्ञानशाला की आंचलिक संयोजिका डॉ० प्रेमलता चोरड़िया, कार्यकारिणी समिति सदस्य मानमालचंद भंसाली, क्षेत्रीय संयोजिका मंजु घोड़ावत, कार्यसमिति सदस्य पूजा पारख की उपस्थिति में संपन्न हुआ।

सैंथिया सभा के अध्यक्ष राजकुमार पुगलिया, मंत्री पंकज पारख, महिला मंडल की मंत्री निकिता छाजेड़, टीपीएफ अध्यक्ष

अनिता छाजेड़, ज्ञानशाला क्षेत्रीय संयोजिका सुनीता छाजेड़, मुख्य प्रशिक्षिका ज्योति पुगलिया, ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाएँ, अभिभावक एवं अन्य गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति में ज्ञानार्थी बच्चों ने प्रस्तुतियाँ दी।

मंजु घोड़ावत ने कहानी के माध्यम से बच्चों के अच्छे संस्कार कैसे होते हैं इस बारे में बताया। मालचंद ने बच्चों को बताया कि जैन संस्कार क्या है। एक बच्चे में कैसे जैन संस्कार का बीजारोपण किया जा सकता है। पूजा पारख ने भी ज्ञानशाला की आवश्यकता पर प्रकाश डाला। सभा के

अध्यक्ष राजकुमार पुगलिया ने अपने विचार रखे। उपासक प्रकाश सुराणा ने ज्ञानशाला की महत्ता पर प्रकाश डाला। प्रशिक्षिका बहन बबीता पुगलिया ने कार्यक्रम का संचालन किया। संघान के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ।

◆ अपनी कमजोरी को स्वीकार कर उसे परिमार्जित करने का प्रयास करो।

— आचार्यश्री महाश्रमण



तेयुप के विविध कार्यक्रमों के आयोजन



दक्षिणांचल स्तरीय टीटीएफ लेवल-२ के दो दिवसीय शिविर का आयोजन

विजयनगर।

अभातेयुप के तत्वावधान में तेयुप, विजयनगर द्वारा आयोजित दक्षिणांचल स्तरीय तेरापंथ टास्क फोर्स लेवल-२ के दो दिवसीय शिविर का आयोजन अभातेयुप के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष रमेश डागा की अध्यक्षता में धर्मशी रिसोर्ट में किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से किया गया। मंगलाचरण विजय स्वर संगम की टीम द्वारा किया गया। श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन अभातेयुप अभूतपूर्व अध्यक्ष विमल कटारिया ने किया। तेयुप अध्यक्ष श्रेयांस गोलछा ने एन०डी०आर०एफ० की टीम एवं पधारे हुए सभी का स्वागत किया। अभातेयुप महामंत्री पवन मांडोत, निवर्तमान अध्यक्ष विमल कटारिया, प्रबुद्ध विचारक दिनेश पोखरणा, अभातेयुप, टीटीएफ राष्ट्रीय सह-प्रभारी पवन नवलखा, दक्षिण के प्रभारी गौतम खाब्या, शाखा प्रभारी सोनू डागा, एन०डी०आर०एफ० से इंस्पेक्टर

मुकेश कुमार ने अपनी शुभकामनाएँ व्यक्त की।

दो दिवसीय कार्यशाला में एन०डी०आर०एफ० की टीम से इंस्पेक्टर मुकेश कुमार एवं टीम के ६ अन्य हेड कांस्टेबल ने विकट एवं आपदाकालीन परिस्थिति जैसे भूकंप, बाढ़, दुर्घटना बचाव की आधुनिक तकनीकें सीपीआरए एमएफआर आदि द्वारा जरूरतमंद की सहायता कैसे की जाए, उसके कई सारे गुर सिखाएँ।

कार्यशाला में दक्षिण के सुदूर क्षेत्रों से कुल ३४ संभागियों ने अपनी उपस्थिति दर्ज करवाई। कार्यशाला को सफल बनाने में दक्षिण के प्रभारी गौतम खाब्या, कर्नाटक राज्य सहयोगी इंदर छाजेड़, तमिलनाडु राज्य सहयोगी संदीप मूथा, अभातेयुप से राकेश दक, विजयनगर परिषद् से संयोजक देवांग बैद, राहुल कावडिया ने अथक श्रम का नियोजन किया।

इस कार्यशाला के प्रायोजक परिवार राजेंद्र कुमार, श्रेयांस गोलछा, गंगाशहर बैंगलोर, महेंद्र कुमार, विकास, आयुष बांठिया, बीकानेर बैंगलोर, माणकचंद, गौतमचंद खाब्या, बोरियापुरा बैंगलोर, मालचंद, आलोक कुमार, चिराग गंग, गंगाशहर-बैंगलोर रहे।

इस अवसर पर अभातेयुप से विनोद मूथा, नवनीत मूथा, अमित दक, महावीर टेबा, परिषद मंत्री राकेश पोकरना, सहमंत्री कमलेश चोपड़ा, संजय भटेवरा, कोषाध्यक्ष आलोक गंग, कार्यसमिति सदस्य मनोज बरडिया, पवन बैद, आशीष सिंधी आदि की उपस्थिति रही। अंत में एनडीआरएफ की टीम का मोमेंटो देकर सम्मान किया गया एवं सभी संभागियों को सर्टिफिकेट प्रदान किया गया।

कार्यक्रम का संचालन उपाध्यक्ष विकास बांठिया ने किया। अंत में आभार ज्ञापन संयोजक देवांग बैद ने किया।

कैसी हो जीवनशैली कार्यशाला

बैंगलुरु।

तेयुप, बैंगलुरु के तत्वावधान में साध्वी गवेषणाश्री जी के सान्निध्य में राजकुमार दुगड़, शैषाद्रीपुरम् के निवास स्थान पर 'कैसी हो जीवनशैली' कार्यशाला आयोजित की गई। अध्यक्ष प्रदीप चोपड़ा ने स्वागत वक्तव्य दिया।

साध्वी गवेषणाश्री जी ने कहा कि जिंदगी आर्टफुल हो, एन्जॉयफुल हो, सक्सेसफुल हो, यह हर व्यक्ति चाहता है। पर हम चाहते हैं, करते कुछ नहीं। आज व्यक्ति की जिंदगी अस्त-व्यस्त हो चुकी है। ना खाने का पता, न सोने का, ना उठने का। जिंदगी को यदि स्मार्टफुल बनाना है तो पहले जीवनशैली में परिवर्तन करना होगा। कृष्ण पक्ष की तरह जिंदगी ना बनकर शुक्ल पक्ष की तरह जिंदगी बनाएँ। जिसमें प्रकाश हो, उद्योत हो, आतय हो और तेजस्विता हो। साध्वी मेरुप्रभा जी ने सुमधुर गीतिका के द्वारा विषय प्रस्तुति दी।

आभार ज्ञापन अमित भंडारी ने किया। सभा के मंत्री गौतम मांडोत, विनोद कोठारी, पवन चोपड़ा, विवेक मरोठी, विमल धारीवाल, भरत रायसोनी, प्रतीक जोगड़ ने कार्यशाला की निष्पत्ति पर विचार रखे। मंच संचालन मंत्री विकास बाबेल ने किया। तेयुप साथियों और श्रावक समाज की अच्छी संख्या में उपस्थिति रही।

एटीडीसी सार-संभाल यात्रा

राजाजीनगर।

तेयुप, राजाजीनगर द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायनोस्टिक सेंटर एंड डेंटल केयर श्रीरामपुरम की सार-संभाल हेतु अभातेयुप एटीडीसी कोर कमेटी के सदस्य निर्मल बैंगानी, आलोक छाजेड़, ललित मेहर का पदार्पण हुआ। परिषद परिवार द्वारा सदस्यों का एटीडीसी पट द्वारा स्वागत किया गया। इस अवसर पर तेयुप अध्यक्ष अरविंद गन्ना, पूर्व अध्यक्ष सतीश पोरवाड़ एवं राजेश देरासरिया की उपस्थिति रही।

सार-संभाल का आगाज सामूहिक नमस्कार महामंत्र से हुआ। तेयुप, राजाजीनगर संस्थापक अध्यक्ष एवं एटीडीसी प्रभारी सुनिल बाफना ने एटीडीसी की गतिविधियों की जानकारी प्रदान की। कोर कमेटी सदस्यों द्वारा एटीडीसी की भावी योजनाओं पर चिंतन-मनन किया गया। एटीडीसी द्वारा प्रदत्त सेवाओं को कैसे डिजिटल माध्यम से जोड़ा जाए एवं अनेक बिंदुओं पर विचार-विमर्श किए गए। निर्मल बैंगानी ने कहा कि एटीडीसी श्रीरामपुरम मानव सेवा के क्षेत्र में खूब अच्छा काम कर रही है, समय-समय पर स्थानीय सदस्यों को अच्छे स्वास्थ्य पैकेट भी प्रदान कर रही है।

सेवा की ओर बढ़ते कदम

विजयनगर।

तेयुप, विजयनगर द्वारा सेवा के उपक्रम के अंतर्गत बैंगलोर से लगभग 9३५ किलोमीटर दूर निर्मित येलियूर प्रजा केंद्र के सरकारी स्कूल में स्वर्गीय कुलदीप बागरेचा की स्मृति में विजयनगर क्रिकेट क्लब के दोस्तों एवं तेयुप, विजयनगर प्रबंधन मंडल के सहयोग से ५० लीटर की कैपेसिटी का जल शुद्धिकरण संयंत्र स्कूल के बच्चों, शिक्षकों एवं अन्य स्टाफ के स्वास्थ्य का ध्यान रखते हुए लगवाया गया।

तेयुप, विजयनगर से अध्यक्ष श्रेयांस गोलछा, पूर्व अध्यक्ष महावीर टेबा, उपाध्यक्ष विकास बांठिया, सहमंत्री कमलेश चोपड़ा, कोषाध्यक्ष आलोक गंग एवं सेवा कार्य संयोजक दिनेश मेहता सहित अनेक सदस्यों ने सेवाकार्य में सहभागिता निभाई।

● तेयुप, विजयनगर द्वारा सेवा के उपक्रम के अंतर्गत वृद्धाश्रम, बश्वेश्वर नगर में स्वर्गीय विनोद कुमार सेठिया की स्मृति में सेठिया परिवार द्वारा नाश्ते की व्यवस्था की गई। वृद्धाश्रम के मैनेजमेंट ने तेयुप, विजयनगर की प्रशंसा की।

तेयुप, विजयनगर अध्यक्ष श्रेयांस गोलछा, उपाध्यक्ष विकास बांठिया, मंत्री राकेश पोखरणा, सेवा कार्य संयोजक दिनेश मेहता, सदस्य विकास लुणिया तथा सेठिया परिवार ने उपस्थित होकर सेवाकार्य में अपनी सहभागिता निभाई।

बैग पैकिंग कार्यक्रम का आयोजन

साउथ हावड़ा।

अभातेयुप द्वारा निर्देशित तेरापंथ किशोर मंडल, साउथ हावड़ा द्वारा बैग पैकिंग का आयोजन बोटैनिकल गार्डन में हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के संगान से हुआ। अध्यक्ष बीरेंद्र बोहरा ने आए हुए सभी किशोरों और उपस्थित युवकों का स्वागत अभिनंदन किया। अध्यक्ष ने विगत में किशोरों द्वारा किए गए कार्यों को सराहा।

मंत्री गगनदीप बैद ने कहा कि किशोर मंडल साउथ हावड़ा द्वारा विगत में Environmental drive का जो आयोजन किया गया वह बहुत अच्छा और जागरूकतापूर्ण रहा। संगठन मंत्री एवं किशोर मंडल के पर्यवेक्षक रोहित बैद ने सभी को धन्यवाद दिया।

कार्यक्रम में २२ किशोरों की

सहभागिता रही। कार्यक्रम में सबसे पहले ग्रेट बनियान ट्री को सभी किशोर देखकर बहुत उत्सुक हो गए। सभी ने उसके बारे में जाना-समझा उसके बाद जुम्बा सत्र रखा गया। जिसमें किशोर मंडल से आशीष बैद एवं अनंत चोरडिया ने सभी को सुंदर जुम्बा करवाया। किशोर मंडल से संजोग कुमार पारख ने सभी किशोरों को प्रेक्षाध्यान करवाया। सराहनीय सेमिनार भी हुआ जिसमें किशोर मंडल ने सभी को भिक्षु स्वामी का पूरा जीवन परिचय दिया और कैसे संघ को और मजबूत कर सके इसके बारे में बताया।

बचपन के खेल में सभी किशोरों ने काफी सारे खेल खेले। खेल के विजेता किशोरों को युवक परिषद द्वारा प्रोत्साहित किया गया तथा पूरी टीम के हर किशोरों को भी गिफ्ट दिए गए। अंत में तीन लक्की

ड्रा चिट्स उपाध्यक्ष हितेंद्र बैद द्वारा निकाली गई। सभी लक्की किशोरों को परिषद द्वारा प्रोत्साहित किया गया।

संयोजक संजोग कुमार पारख ने किशोर मंडल, साउथ हावड़ा का संक्षिप्त परिचय आए हुए सभी महानुभावों के सामने रखा और साध्वी स्वर्णरेखा जी तथा मुनि जिनेश कुमार जी की असीम कृपा पूरी किशोर मंडल पर निरंतर बरस रही है। कार्यक्रम में परिषद के अध्यक्ष विरेंद्र बोहरा, उपाध्यक्ष ज्ञानमल लोढ़ा, हितेंद्र बैद, मंत्री गगन दीप बैद, सहमंत्री अमित बेगवानी, राहुल दुगड़, संगठन मंत्री एवं किशोर मंडल के पर्यवेक्षक रोहित बैद सहित अनेक सदस्यों की उपस्थिति रही।

कार्यक्रम का संचालन किशोर मंडल के संयोजक संजोग कुमार पारख ने किया।

आचार्य तुलसी डायनोस्टिक सेंटर समीक्षा यात्रा

गांधीनगर।

आचार्य तुलसी डायनोस्टिक सेंटर की समीक्षा यात्रा के तहत एटीडीसी कोर कमेटी सदस्य रायपुर से निर्मल बैंगानी, मैसूर से ललित मेहर एवं बैंगलोर से आलोक छाजेड़, तेयुप, बैंगलुरु द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायनोस्टिक सेंटर, राजाजीनगर में पधारे।

तेयुप अध्यक्ष प्रदीप चोपड़ा द्वारा सभी का जैन पट्ट से स्वागत किया गया। एटीडीसी संयोजक रोहित कोठारी ने एटीडीसी में चल रही गतिविधियों की जानकारी दी।

पूर्व प्रभारी रजत बैद, पर्यवेक्षक विक्रम सेठिया, सह-संयोजक विवेक मरोठी आदि ने अपनी जिज्ञासाएँ एवं सुझाव प्रस्तुत किए। कोर कमेटी सदस्य निर्मल, ललित मेहर एवं आलोक छाजेड़ ने जिज्ञासाओं का समुचित समाधान देते हुए और अधिक विकास के मार्ग सुझाए। तत्पश्चात सभी आगंतुकों ने एटीडीसी का निरीक्षण किया।

♦ हमारे भीतर अनंत ज्ञान, अनंत आनंद और अनंत शक्ति है। हम उसका अनुभव करने का प्रयास करें। ध्यान के द्वारा इनका साक्षात्कार किया जा सकता है।

— आचार्यश्री महाश्रमण

जीवन के भौतिक और अध्यात्मिक विकास में बाधक तत्त्व है गुस्सा : आचार्यश्री महाश्रमण



सिंगवाड़ा, १० फरवरी, २०२३

जन-जन के तारक आचार्यश्री महाश्रमण जी प्रातः अपनी धवल वाहिनी के साथ लगभग १५ किलोमीटर का विहार कर सिंगवाड़ा पधारे। पावन अमृत वर्षा करते हुए जनोद्धारक परम पावन ने

फरमाया कि धार्मिक शास्त्रों में मोक्ष की बात आती है। जीवन का, इस मानव जन्म का अंतिम लक्ष्य मोक्ष हो सकता है। मानव जीवन में कुछ ऐसा करें कि हमेशा के लिए जन्म-मरण की परंपरा से छुटकारा जल्दी ही मिल जाए।

शास्त्रकार ने बताया कि मोक्ष की प्राप्ति में कुछ बाधाएँ हैं, जिनसे मोक्ष प्राप्त नहीं हो सकता। एक बात बताई कि जो आदमी चंड, बहुत गुस्सैल होता है, स्वभाव बड़ा आक्रोशशील होता है वह मोक्ष नहीं प्राप्त कर सकता। गुस्सा हमारी एक कमजोरी है और गुस्सा हमारा शत्रु भी है।

विद्यार्थियों के लिए तो ज्ञान में एक बाधक तत्त्व गुस्सा बताया गया है। जीवन में गुस्सा नहीं करना चाहिए। कहने की बात कही जा सकती है। बड़ी और कड़ी बात भी कही जा सकती है, पर बिना गुस्से के कहने का अधिक महत्त्व है। क्षमा करना बड़प्पन है। गुस्सा परिहरणीय होता है। शांति-समता धर्म है। साधु तो समतामूर्ति, दयामूर्ति, क्षमामूर्ति, त्यागमूर्ति होना चाहिए। आप गृहस्थों के लिए भी क्षमा

अच्छी चीज हो सकती है।

दो प्रकार के शस्त्र होते हैं—आयस शस्त्र और मार्दव शस्त्र। लोहे के शस्त्र आयस शस्त्र होते हैं। मृदुता-नम्रता, मैत्री और प्रेम का शस्त्र मार्दव शस्त्र है। सब जगह आयस शस्त्र काम नहीं करता, कई जगह यह मार्दव शस्त्र काम करता है। प्रेम से दिल को जीता जा सकता है। मार्दव शस्त्र व्यवहार व्यापार में काम कर सकता है, यह एक प्रसंग से गुरुदेव ने समझाया। सूर्य जैसा प्रचंड-तेजस्वी तो भले बनें, पर चंड-गुसैल न बनें। गुस्सा तो काले नाग की तरह होता है।

मोक्ष में एक बाधक तत्त्व है—गुस्सा। दूसरा है—अहंकार। चुगलीखोर बनना, बिना सोचे-विचारे काम करना, अनुशासनहीन रहना, विनय में अपांडित्य, संविभाग नहीं करना ये वृत्तियाँ

भी मोक्ष और समस्या निवारण में भी बाधक हैं। इन बुराइयों को छोड़ अच्छे मार्ग पर चलें तो मोक्ष की दिशा में गति-प्रगति हो सकती है। समस्या से मुक्ति मिल सकती है, जीवन अच्छा रह सकता है।

पूज्यप्रवर ने सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति की प्रतिज्ञाओं को समझाकर विद्यार्थियों एवं स्थानीय लोगों को स्वीकार करवाई।

पूज्यप्रवर के स्वागत में राजकीय विद्यालय के प्रिंसिपल जगाराम देवासी ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। अणुव्रत समिति एवं विद्यालय परिवार द्वारा प्रतीक चिह्न से सम्मान किया गया।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

जीवन में सद्गुणों की संपदा को पुष्ट रखना चाहिए : आचार्यश्री महाश्रमण

सिरधर, १३ फरवरी, २०२३

धर्मज्ञाता आचार्यश्री महाश्रमण जी प्रातः विहार कर अपनी धवल सेना के साथ सिरोही जिले के सिरधर ग्राम के आदर्श विद्यालय में पधारे। मुख्य प्रवचन में पूज्यप्रवर ने देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि एक शिक्षा है कि थोड़े के लिए बहुत को नहीं खोना चाहिए। लाभ कम, नुकसान ज्यादा ऐसा काम नहीं करना चाहिए।

एक साधु के पास जो संन्यास का धन है, बहुत बड़ी संपदा होती है। साधु अगर तुच्छ संसारी भोगों के लिए साधुत्व

को छोड़ देता है, तो बहुत बड़ी संपदा खो देता है। साधुत्व की आध्यात्मिक संपदा के सामने बड़ी से बड़ी भौतिक संपदा रखी जाए, तुलनात्मक दृष्टि से देखें तो साधु की संपदा बहुत बड़ी है। भौतिक चीजें तो नश्वर हैं, आगे साथ जाने वाली नहीं हैं।

साधना की संपदा तो आगे भी जाने वाली है। यह एक प्रसंग से समझाया कि साधु के लिए भौतिक रत्न तुच्छ हैं। साधुत्व-संन्यास सर्वोत्तम है। गृहस्थ को भौतिक चीजें अपेक्षित होती हैं। धन भी चाहिए पर धन से बढ़िया चीज है धर्म।

धर्म यानी नैतिकता को छोड़कर ज्यादा धन कमाने का प्रयास करता है, मानो थोड़े के लिए बहुत खो देने वाली बात हो जाती है।

श्रावक अर्हन्नक का उदाहरण हम पढ़ते हैं, धर्म के लिए जीवन की परवाह नहीं की। धर्म को छोड़ने से अनेक भव बिगड़ सकते हैं। धर्म जाने के बाद क्या संपत्ति बचेगी। धर्म वह वस्त्र नहीं जो चाहो तो ओढ़ लो, चाहो तो छोड़ दो।

गृहस्थ की आजीविका धर्म के साथ हो। अध्यात्म को मोह में आकर छोड़ना नहीं चाहिए। जीवन में अहिंसा,

सद्भावना, ईमानदारी जैसे संस्कार विद्यार्थियों में रहें। ज्ञान का अच्छा विकास हो। ज्ञान और आचार जीवन में हो तो विद्यार्थी लाभान्वित हो सकता है, योग्य बन सकता है। विचार, आचार, संस्कार और व्यवहार अच्छा रहे।

अल्प के लिए बहुत को नहीं खोना चाहिए। जीवन में सद्गुणों की संपदा को पुष्ट रखना चाहिए। तुच्छ चीजों के लिए अपने सद्गुणों की संपदा को यथासंभवतया नहीं खोना चाहिए। पूज्यप्रवर ने सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति के संकल्पों को समझाकर

विद्यार्थियों एवं स्थानीय लोगों को स्वीकार करवाए।

पूज्यप्रवर के स्वागत में स्थानीय सरपंच गोमाराम देवासी, विद्यालय की ओर से मनीष कुमार सिंह, स्कूल के बच्चों ने गीत प्रस्तुत किया। सिरोही जिला एसडीएम सीमा खेतान ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। व्यवस्था समिति द्वारा विद्यालय परिवार का सम्मान किया गया।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

कर्म निर्जरा हो तपस्या का एकमात्र लक्ष्य : आचार्यश्री महाश्रमण

नून गाँव, ६ फरवरी, २०२३

जिन शासन प्रभावक आचार्यश्री महाश्रमण जी प्रातः लगभग १४ किलोमीटर का विहार कर अपनी धवल सेना के साथ नून ग्राम पधारे। परमपूज्यश्री ने अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि समाधि के चार प्रकार बताए गए हैं—विनय समाधि, श्रुत समाधि, तपः समाधि और आचार समाधि। ये चार चीजें ऐसी हैं, जिनसे समाधान, शांति, संतोष, तुष्टि, पुष्टि, सुख प्राप्त हो सकता है।

सुविनीत शिष्य सुखी बनता है, अविनीतता दुःख का कारण बन सकती है। संपत्ति-विपत्ति दोनों बहनें हैं। हमारे जीवन में कई बार

विपत्तियाँ आ सकती हैं। आपदा-संपदा जीवन में आती रहती है। यह एक प्रसंग से समझाया कि संपत्ति-विपत्ति सभी बहनें हैं। आदमी दोनों स्थिति में मानसिक समता भाव रखें।

विनय से संपत्ति प्राप्त होती है। दुःख का नाश होता है। ज्ञान से भी समाधि प्राप्त हो सकती है। स्वाध्याय, पठन, चिंतन-मनन करें। स्वाध्याय से सुख प्राप्त हो सकता है। तपस्या से भी समाधि-समाधान प्राप्त हो सकता है। तपस्या के बारह प्रकार हैं। तपस्या से निर्जरा होती है। सारा शुभ योग समाधि है। आचरण भी समाधि है। तपस्या निर्जरा के लिए ही हो। आचार का पालन भी मोक्ष प्राप्ति के लिए हो।

विद्या विनय से शोभित होती है। पांडित्य के साथ विनय हो। जैसा पात्र हो वैसा ज्ञान देना चाहिए। ज्ञान के साथ अहंकार न हो। ज्ञानदाता के साथ विनय का भाव हो। इन चारों समाधि से समाधान प्राप्त हो सकता है।

पूज्यप्रवर के स्वागत में राजकीय विद्यालय से जगदीश चौधरी ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। व्यवस्था समिति द्वारा विद्यालय परिवार का सम्मान किया गया।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।



ना कुछ तेरा, ना कुछ मेरा, दुनिया रैन बसेरा : आचार्यश्री महाश्रमण

बूँव, 99 फरवरी, 2023

ज्योतिपुंज आचार्यश्री महाश्रमण जी प्रातः लगभग 90 किलोमीटर का विहार कर बूँव के राजकीय विद्यालय में पधारे। जन-जन का कल्याण करने वाले आचार्यप्रवर ने मंगल प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि मानव जाति एक है, यह एक बात है। नय की दृष्टि से विचार करें तो पूरा विश्व एक है, सारे प्राणी समान हैं।

संग्रह नय की दृष्टि से देखें तो एकता ही एकता दिखाई दे सकती है। एक संकीर्णता या उपयोगिता के आधार पर मेरे-तेरे का विचार हो सकता है। और असंकीर्णता की वृत्ति में सोचें तो पूरी धरती, पूरा विश्व हमारा परिवार है। पूरा विश्व एक परिवार है। व्यवहार नय से अनेकता, भेद-भेद देखा जा सकता है। सारांश इतना निकल सकता है कि मैत्री भाव रहे। मैत्री के संदर्भ में सब एक हैं।

ममत्व के आलोक में मेरा-तेरा की बात हो सकती है। परिग्रह की चेतना वाला आदमी सोचता है—मेरा सो मेरा, तेरा सो भी मेरा। एक उदार दृष्टिकोण वाला कहता

है—तेरा सो तेरा और मेरा सो भी तेरा। एक साधु पुरुष जो अध्यात्म के आलोक में सोचता है, निश्चय नय में सोचता है—ना कुछ तेरा, ना कुछ मेरा, दुनिया रैन बसेरा।

मैत्री के संबंध में एकता की बात भी हो सकती है और कहीं उपयोगिता के आधार पर यह भिन्नता या अनेकता भी हो सकती है। अनेक संदर्भों में एकता-अनेकता को समझा जा सकता है। कौन ऊँचा, कौन नीचा यह विवेचन का विषय हो सकता है, पर घृणा-नफरत के संदर्भ में ऊँचे-नीचे के आधार पर घृणा को प्रश्रय नहीं मिलना चाहिए।

दुनिया में इतने धर्म-संप्रदाय, पंथ हैं, अब उनमें देखें तो भेद भी है और अभेद भी है। अनेक दर्शन-संप्रदाय हैं। भेद हैं, तो लड़ाई-झगड़े का कारण न बनें। जो जैसा है, वैसा मान लेना यथार्थ है। हमारे में पूरा ज्ञान तो है नहीं। अज्ञानता है, इसलिए मिथ्यात्व है। यह भी कहना कठिन है। दृष्टिकोण सही रहे। अगर हमारा सम्यक् दृष्टिकोण है, तो आदमी की गति सही दिशा में हो सकती है।



बाह्य दृष्टि का भी महत्त्व है। दृष्टि खुलने से कुछ काम अपने आप हो सकते हैं। भीतर की कोई आँख खोल दे तो बहुत बड़ी बात हो सकती है। ज्ञानी पुरुष सम्यक् दृष्टिकोण बनाने का कार्य करते हैं। वे आत्मकल्याण की दृष्टि से बहुत बड़ा उपकार का कार्य करते हैं। अध्यात्म ज्ञान के अधिकृत प्रवक्ता तीर्थंकर होते हैं।

उनसे बड़ा ज्ञानी दुनिया में मिलना मुश्किल है। वे तो वीतराग-आप्त पुरुष होते हैं, उनकी वाणी यथार्थ होती है।

नशा आदमी के लिए हानिकारक हो सकता है। नशे से चित्त भ्रान्त हो जाता है, आदमी पाप कर दुर्गति में चला जाता है। आदमी दुर्व्यसनों से बचे। अच्छे मार्ग पर चले। पूज्यप्रवर ने सद्भावना, नैतिकता एवं नशामुक्ति के संकल्पों को समझाकर

स्वीकार करवाया।

पूज्यप्रवर के स्वागत में स्कूल के प्राचार्य रवींद्र कुमार, जसवंतपुरा के एसबीएम राजेंद्र सिंह चांडावत ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। व्यवस्था समिति द्वारा विद्यालय परिवार एवं एसडीएम का सम्मान किया गया।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

आचार्यश्री महाश्रमण : चित्रमय झलकियाँ

